सांध्य दैनिक 4PM

यदि आप दृढ संकल्प और पूर्णता के साथ काम करेंगे तो सफलता जरूर मिलेगी।

–धीरूभाई अंबानी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंकः 71 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार 16 अप्रैल, 2026

हार का सिलसिला तोड़ना चाहेगी मुंबई ... 7 | बंगाल का चुनाव, कईयों के अस्तित्व... 3 | पिछड़ों का अधिकार लूटने की साजिश... 2

संसद का विशेष सत्र और सियासी भूकंप ?

राहुल गांधी का आरोप सत्ता पर कब्जा करने की साजिश

» संसद के विशेष सत्र में संविधान संशोधन विधेयक बिल पेश किया गया

» महिला आरक्षण बिल पर भिड़े अमित शाह और अखिलेश, ओम बिरला को करना पड़ा हस्तक्षेप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश की राजनीति इस वक्त किसी शांत झील की तरह नहीं बल्कि उस ज्वालामुखी की तरह दिख रही है जिसकी सतह भले स्थिर हो लेकिन भीतर लावा उबल रहा हो। संसद का विशेष सत्र शुरू होने से ठीक पहले जयराम रमेश का राजनीतिक भूकंप वाला बयान इस उबलते माहौल में बारूद का काम कर रहा है। और सवाल उठ रहा है कि क्या वाकई आने वाले समय में कोई बड़ा संवैधानिक टकराव आने वाला है या फिर यह विपक्ष की रणनीतिक चेतावनी है?

दरअसल आज से शुरू हो रहे इस विशेष सत्र में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर चर्चा प्रस्तावित है । यह वही कानून है जिसे देश महिला आरक्षण के नाम से जानता है। लेकिन इस बार मामला सिर्फ महिला आरक्षण तक सीमित नहीं है। विपक्ष को शक है कि इसके साथ साथ कुछ और बड़े विधेयक भी पेश किए जा सकते हैं जिनमें संविधान संशोधन जैसे गंभीर कदम शामिल हो सकते हैं। यही वजह है कि जयराम रमेश ने साफ शब्दों में कह दिया कि देश तैयार रहे क्योंकि सियासत की जमीन हिलने वाली है। यही नहीं संसद के विशेष सत्र में संविधान संशोधन विधेयक 2026, बिल को भी पेश किया जा चुका हैं।

तकनीकी नहीं राजनीतिक है आरोप

राहुल गांधी का यह आरोप सिर्फ तकनीकी नहीं बल्कि बेहद राजनीतिक है। वह कह रहे हैं कि जब देश में जाति आधारित जनगणना की मांग जोर पकड़ रही है तब सरकार पुराने आंकड़ों के सहारे नया राजनीतिक नक्शा बनाना चाहती है। इसका सीधा असर पिछड़े वर्गों, दलितों और आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधित्व पर पड़ सकता है। यानी जो सवाल अब तक सामाजिक न्याय का था, वह अब सीधे सत्ता के संतुलन का सवाल बन गया है।

हिलने वाली है सियासत की जमीन

यह बयान यूं ही हवा में नहीं आया। इसके पीछे वह गहरी आशंकाएं है कि सत्ता पक्ष के संसद इस विशेष सत्र का इस्तेमाल केवल कानून पारित करने के लिए नहीं बल्कि राजनीतिक समीकरणों को स्थायी रूप से बदलने के लिए कर सकते हैं। और यहीं से भूकंप की असली व्याख्या शुरू होती है। यह भूकंप भूगोल का नहीं लोकतंत्र के ढांचे का हो सकता है। इसी कड़ी में राहुल गांधी का हमला और भी धारदार है। उन्होंने सीधे तौर पर आरोप लगाया है कि सरकार महिला आरक्षण के नाम पर परिसीमन और गेरीमैंडरिंग के जरिए सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है। उनका कहना है कि 2011 की जनगणना के आंकड़ों का इस्तेमाल कर नई राजनीतिक सीमाएं तय करना एक सोची समझी रणनीति हो सकती है जिससे भविष्य के चुनावों में फायदा उठाया जा सके।

> लोकसभा में महिलाओं के लिए आरक्षण विधेयक पेश, सांसदों में हुई तीखी बहस

उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सीटों का संतुलन बदल सकता है

जयराम रमेश का भूकंप दरअसल कई स्तरों पर पढ़ा जा सकता है। पहला यह संसद के भीतर तीखी टकराहट का संकेत है जहां हर विधेयक पर जोरदार विरोध होगा बहस होगी और संभव है कि कार्यवाही बाधित भी हो। दूसरा यह सड़क से लेकर सोशल मीडिया तक राजनीतिक आंदोलन के तेज होने का इशारा है। और तीसरा यह उस व्यापक नैरेटिव की शुरुआत हो सकती है जिसमें विपक्ष सरकार को संविधान के साथ खिलवाड़ करने वाली ताकत के रूप में पेश करेगा। अगर इसे थोड़ा और गहराई से समझें तो यह भूकंप दरअसल 2026-2029 की राजनीति की नींव हिला सकता है। परिसीमन की प्रक्रिया जो लंबे समय से टलती रही है अगर अब तेज होती है तो उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सीटों का संतुलन बदल सकता है। इससे न सिर्फ राज्यों की राजनीतिक ताकत प्रभावित होगी बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता का समीकरण भी बदल सकता है। यही वह बिंदु है जहां राहुल गांधी का सत्ता पर कब्जा वाला आरोप फिट बैठता है। वह कह रहे हैं कि यह सिर्फ कानून बनाने की प्रक्रिया नहीं बल्कि भविष्य की राजनीति को अपने पक्ष में ढालने की कोशिश है। और अगर ऐसा है तो यह विपक्ष के लिए अस्तित्व की लड़ाई बन सकती है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम दिलचस्प मोड़ पर

यहां नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक दिलचस्प मोड़ पर खड़ा है। एक ओर यह महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33 फीसदी आरक्षण देने का वादा करता है जिस पर लगभग सभी राजनीतिक दल सहमत हैं। लेकिन दूसरी तरफ इस अधिनियम को लागू होने की शर्तें जैसे नयी जनगणना और परिसीमन इसे तत्काल प्रभाव से लागू होने से रोक रही हैं। विपक्षी राजनीतिक दलों का आरोप है कि यह कानून अभी नहीं कभी नहीं वाली स्थिति पैदा कर सकता है। मोदी सरकार के लिए यह सत्र एक अवसर भी है और परीक्षा भी। अवसर इसलिए कि वह महिला सशक्तिकरण के बड़े एजेंडे को आगे बढ़ा सकती है और परीक्षा इसलिए कि विपक्ष इसे लोकतांत्रिक संतुलन के साथ छेड़छाड़ के रूप में पेश करने में जुटा है।

अलग-अलग दावे, अलग-अलग पहलू

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि सरकार और उसके समर्थक यह तर्क दे सकते हैं कि महिला आरक्षण जैसे ऐतिहासिक फैसले को टालना भी उचित नहीं है और परिसीमन व जनगणना जैसी प्रक्रियाएं संवैधानिक अनिवार्यता हैं। उनके लिए यह सुधार की दिशा में उठाया गया कदम है न कि साजिश। यानी एक ही कदम दो पूरी तरह अलग कहानियां। एक तरफ सशक्तिकरण दूसरी तरफ सत्ता का केंद्रीकरण। एक तरफ संविधान का पालन दूसरी तरफ संविधान की आड़ में खेल। संसद का यह विशेष सत्र अब सिर्फ एक औपचारिक बैठक नहीं रह गया है। यह उस अखाड़े में बदल चुका है जहां शब्द हथियार हैं आरोप ढाल हैं और हर बयान एक नई राजनीतिक लकीर खींच रहा है। जयराम रमेश का राजनीतिक भूकंप कोई अचानक आने वाली घटना नहीं बल्कि उस प्रक्रिया का नाम है जो धीरे धीरे जमीन को कमजोर करती है और फिर एक दिन सब कुछ हिला देती है। यह भूकंप आएगा या नहीं यह महज कुछ घंटों में ही साफ हो जाएगा। लेकिन इतना तय है कि उसकी आहट ने ही सियासत को बेचैन कर दिया है। और जब सियासत बेचैन होती है तो लोकतंत्र की धड़कन तेज हो जाती है कभी उम्मीद में कभी आशंका में।

स्टालिन ने काले कपड़े पहनकर बिल की कॉपी में लगाई आग

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने गुरुवार सुबह प्रस्तावित परिसीमन विधेयक के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और उसकी एक कॉपी भी जलाई। स्टालिन ने राज्य भर में परिसीमन विरोधी आंदोलन शुरू करने के लिए काला झंडा भी फहराया। एक्स पोस्ट करते हुए उन्होंने लिखा, परिसीमन को लेकर तमिलनाडु भर में विरोध की भावना फैल जाए। फासीवादी भाजपा का अहंकार चूर-चूर हो जाए। उस समय, तमिलनाडु में हिंदी के विरोध में जो आग भड़की थी, उसने दिल्ली को भी झुलसा दिया था। हमारी वह आग तभी शांत हुई, जब दिल्ली ने हार मान ली। उन्होंने आगे लिखा, आज मैंने उस काले कानून की एक प्रति जलाकर विरोध की एक और आग जलाई है, जो तमिल लोगों को उनकी अपनी ही धरती पर शरणार्थी बना देता है। यह आग भी पूरे द्रविड़ क्षेत्र में फैल जाएगी।

पिछड़ों का अधिकार लूटने की साजिश कर रही भाजपा: अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- पिछड़े वर्ग की महिलाओं के अधिकार पर भाजपा चुप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । सपा अध्यक्ष यादव ने महिला आरक्षण को लेकर भाजपा पर करारा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सपा आरक्षण के साथ हैं, पर भाजपा की उस चालबाजी के खिलाफ हैं, जो एक साजिश के तहत की जा रही है। यह बिल पीडीए का हक मारने की एक बड़ी साजिश का हिस्सा है। भाजपा देश की सबसे बड़ी पिछड़े वर्ग की महिलाओं के बारे में चुप्पी साधे बैठी है।

अखिलेश ने जारी बयान में कहा कि ये संशोधन के नाम पर जो जल्दबाजी दिखा रहे हैं, उसके पीछे भाजपा के लोगों की मंशा ये है कि जनगणना न करनी पड़े। अगर जनगणना हुई तो जातिवार आंकड़े भी देने पड़ेंगे और जातिवार आरक्षण भी। इसलिए यह भाजपा का एक बहुत बड़ा षड्यंत्र है, जिसमें जनगणना आधारित परिसीमन को नकार कर पिछड़ों का अधिकार लूटा जा रहा है। आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर इसे लागू करने की छूट पार्टियों को मिलनी चाहिए।

बिल को कामगार महिलाओं के बीच बैठकर घोषित किया जाए

अखिलेश यादव ने कहा कि अगर ये बिल इतना ही सही है तो इसे मेरठ-नोएडा की पारिवारिक और कामगार महिलाओं के बीच बैठकर घोषित किया जाए। यह लोकतंत्र के खिलाफ खुफिया लोगों की गुप्त योजना है, जो तब तक स्वीकार्य नहीं है, जब तक प्रक्रि या में सुधार नहीं होगा। यहां बता दें कि सपा प्रारंभ से ही महिला आरक्षण के भीतर एससी-एसटी और पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए अलग से आरक्षण की मांग करती रही है।

भाजपा जनगणना को टालना चाहती

उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण के नाम पर ये जल्दबाजी बता रही है कि अब भाजपा जा रही है। भाजपा जनगणना को टालना चाहती है, क्योंकि तब जातीय जनगणना की भी बात उठेगी और फिर आरक्षण की भी। भाजपा और उनके संगी-साथी इसे कभी भी देना नहीं चाहते हैं। सपा अध्यक्ष ने कहा कि पीडीए प्रहरी एक विचार की तरह हर प्रदेश और हर दल ने स्वीकार कर लिया है। भाजपा राज में सबसे ज्यादा दुखी तो महिलाएं ही हैं। भाजपा की कमीशनखोरी व चंदा वसूली की वजह से जो महंगाई बढ़ी है उससे उनकी रसोई सूनी हो गई है, रही-सही कसर सिलेंडर की बेतहाशा बढ़ती कीमतों ने पूरी कर दी है।

एनडीए के 21 वर्षों के शासन के बाद भी बिहार राष्ट्रीय औसत से बहुत पीछे: तेजस्वी

» आरजेडी के नेता ने बिहार के नए मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को दी बधाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता और बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने नव नियुक्त मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को बधाई दी, साथ ही पिछले 21 वर्षों में एनडीए सरकार के तहत राज्य के प्रदर्शन की आलोचना भी की। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सम्राट चौधरी ने बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

एक्स पर एक पोस्ट में यादव ने लिखा कि सम्राट चौधरी जी को उनके आज के संकल्प को पूरा करने और निर्वाचित मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी को सत्ता से हटाने के लिए हार्दिक बधाई और निर्वाचित मुख्यमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे आशा है कि नए माननीय मुख्यमंत्री इस कड़वी, अप्रिय और कठोर सच्चाई से भलीभांति अवगत होंगे कि एनडीए के 21 वर्षों के शासन के बाद भी बिहार राष्ट्रीय औसत से बहुत पीछे है और नीति आयोग के अधिकांश मानकों पर, जिनमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्रणाली, ध्वस्त कानून व्यवस्था, आय-निवेश, व्यय-उपभोग, रोजगार-रोजगार, गरीबी-प्रवासन, एकसमान प्रगति-समावेशी विकास और मानव विकास के सभी संकेतक शामिल हैं, काफी पीछे है। यादव ने आगे कहा कि उन्हें उम्मीद है कि नई सरकार बिहार के गौरव और हितों की रक्षा करते हुए राज्य की प्रगति, समृद्धि और समग्र विकास के लिए काम करेगी। उन्होंने कहा कि मुझे आशा है कि बिहार की प्रगति, सुख-समृद्धि, शांति, सद्भाव, सुरक्षा और सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध नए निर्वाचित मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी सशक्त रूप से कार्य करेंगे और बिहारियों के गौरव को बाहरी लोगों के हाथों में नहीं सौंपेंगे। समाजवादी श्री सम्राट चौधरी जी को उनके मुख्यमंत्री बनने पर एक बार फिर हार्दिक शुभकामनाएं।

लोस और विस में भी महिलाओं के लिये आरक्षण की व्यवस्था हो: ओपी राजभर

» सुभासपा अध्यक्ष ने किया मायावती का समर्थन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पंचायती राज मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने लोकसभा तथा विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण में से अनुसूचित जातियों (एससी), अनुसूचित जनजातियों (एसटी) तथा अन्य पिछड़े वर्ग (ओबीसी) की औरतों को अलग से आरक्षण देने की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष मायावती की मांग का समर्थन किया है।

ओम प्रकाश राजभर ने बातचीत में मायावती की मांग का जिक्र होने पर कहा कि बसपा प्रमुख की मांग बिल्कुल जायज है और सांसदों को संसद में यह बात उठानी चाहिये। उन्होंने कहा कि त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों की तर्ज पर लोकसभा और विधानसभाओं में भी महिलाओं के लिये आरक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने लोकसभा तथा विधानसभाओं में महिलाओं को 33 त्न आरक्षण में से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्ग की औरतों को अलग से आरक्षण देने की जरूरत बताते हुए बुधवार को कहा कि ऐसा नहीं होना महिला आरक्षण के वास्तविक उद्देश्य को काफी हद तक नकारने जैसा है। मायावती ने लखनऊ कहा कि हालांकि उनकी पार्टी लोकसभा तथा विधानसभाओं में महिलाओं को 33 त्न आरक्षण देने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाये जाने का स्वागत करती है लेकिन इसमें अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्ग की महिलाओं को अलग से आरक्षण नहीं दिये जाने से इन वर्गों की महिलाओं को आरक्षण का पूरा लाभ मिल पाएगा, इसमें काफी संदेह है. उन्होंने कहा, ऐसा न होना महिला आरक्षण के वास्तविक उद्देश्य को काफी हद तक नकारने जैसा है।

अखिलेश यादव नहीं चाहते हैं कि महिलाओं को बराबर का अधिकार मिले

ओम प्रकाश राजभर ने बीजेपी पर महिला आरक्षण के मुद्दे को लेकर जल्दबाजी करके जनगणना कार्य को टालने की नीयत रखने के

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव के बयान पर तल्ख प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा,अखिलेश यादव निश्चित रूप से महिला विरोधी हैं. जब उन्होंने अपनी पत्नी को लेकर एक मौलाना के वक्तव्य पर कोई टिप्पणी नहीं की, तो समझ सकते हैं कि वे महिलाओं के प्रति कितना समर्पित हैं. वह नहीं चाहते हैं कि महिलाओं को बराबर का अधिकार मिले। ओम प्रकाश राजभर ने कहा कि केंद्र सरकार ने महिलाओं के आरक्षण को लेकर संसद का तीन दिन का विशेष सत्र आहूत किया है, जिसमें विपक्ष को अपनी बात मजबूती से रखनी चाहिए।

नोएडा मामले में प्रदेश सरकार पूरी तरह विफल : अजय राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ में अजय राय ने महिला आरक्षण बिल को लेकर भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सबसे पहले कांग्रेस ही यह बिल लेकर आई थी और यदि भाजपा की मंशा साफ होती तो इसे 14 में ही लागू कर दिया जाता। साथ ही उन्होंने नोएडा मामले में सरकार को विफल बताते हुए श्रमिकों को 25 हजार रुपये मानदेय देने की मांग की। अजय राय ने कहा कि सरकार को श्रमिकों के हितों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए और तत्काल राहत प्रदान करनी चाहिए। वहीं, अजय राय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर गंभीर टिप्पणी की है।

» बोले कांग्रेस अध्यक्ष- महिला आरक्षण बिल पर कांग्रेस लाई थी प्रस्ताव

उन्होंने आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी ने जिससे शादी की, उनका भी ध्यान नहीं रखा। ऐसे में उनके मुंह से महिला सम्मान स्वाभिमान की बात करना शोभा नहीं देती है। कानपुर में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा था कि उप्र सरकार ब्राह्मणों को निशान बना रही है। पहले एक फिल्म के जरिये और अब सरकारी दस्तावेज यानी एसआई की भर्ती परीक्षा के प्रश्न पत्र में ब्राह्मणों को अवसरवादी बताकर। उन्होंने आरोप लगाया कि इसके पीछे सरकार की मंशा साफ नजर आ रही है। कहा कि कांग्रेस पार्टी ब्राह्मणों का साथ है। जाजमऊ में आयोजित रोजा इफ्तार पार्टी में उन्होंने कहा कि वह स्वयं भूमिहार ब्राह्मण हैं। उनकी पार्टी के अपने पूरे कार्यकाल में उत्तर प्रदेश में छह ब्राह्मण मुख्यमंत्री दिए हैं। प्रदेश में गैस सिलिंडर की किल्लत पर उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में लोग परेशान हैं। इसकी वजह से वाराणसी में अन्नपूर्णा रसोई बंद हो गई और अयोध्या की सीता रसोई का संचालन भी संकट है।

बामुलाहिजा
कार्टून: हसन जैदी

ये विधेयक देश के संघीय ढांचे को नष्ट कर देंगे: ओवैसी

एआईएमआईएम प्रमुख ने की संवैधानिक संशोधनों को लेकर केंद्र सरकार की आलोचना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। असदुद्दीन ओवैसी ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के कार्यान्वयन से जुड़े प्रस्तावित संवैधानिक संशोधनों को लेकर केंद्र सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि इससे भारत की संघीय संरचना कमजोर हो सकती है। लोकसभा के विशेष सत्र में बोलते हुए एआईएमआईएम प्रमुख ने कहा कि ये विधेयक देश के संघीय ढांचे को नष्ट कर देंगे।

मैं इन विधेयकों के प्रस्तुत किए जाने का कड़ा विरोध करता हूं। उन्होंने साहिर लुधियानवी का एक शेर भी उद्धृत किया,

जिसमें उन्होंने कहा, एक शहंशाह ने बनवा कर हसीन ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक। संसद के विस्तारित बजट सत्र का तीन दिवसीय विशेष सत्र 2023 में पारित कानून को लागू करने के उद्देश्य से तीन संशोधन विधेयकों पर चर्चा के साथ शुरू हुआ, जो लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करता है। इस सप्ताह के आरंभ में, केंद्र ने संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 26 का मसौदा प्रसारित किया, जिसमें महिला आरक्षण ढांचे में बदलाव प्रस्तावित हैं। इस विधेयक के तहत लोकसभा की संख्या बढ़ाकर 850 करने का प्रावधान है, जिसमें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

बंगाल का चुनाव, कईयों के अस्तित्व का सवाल

सरकार बचाने व बनाने के लिए है पूरा जोर

अभिषेक बनर्जी, सुवेंदु अधिकारी का करियर दांव पर

» टीएमसी व बीजेपी में कांटे की लड़ाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बंगाल में चुनावी प्रचार अपने चरम पर है। बीजेपी और टीएमसी के बीच कांटे की टक्कर है। यह चुनाव दोनों पार्टियों के लिए अहम है जहां टीएमसी सत्ता का चौका लगाने के लिए जीतोड़ मेहनत कर रही है वहीं भाजपा इसबार सत्ता को हासिल करने के लिए एक पैर पर खड़ी है। खासतौर से ये चुनाव ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी व भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी के जीवन-मरण का प्रश्न है। ये 4 मई को ही पता चलेगा की बाजी किसके हाथ लगती है। उधर सीटों की बात करे तो कई सीटे ऐसी हैं जहां कांटे की लड़ाई बताई जा रही है। ये सीटें तय करेंगी की बंगाल का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा।

पिछले चुनावों के आंकड़े देखें तो बीजेपी की हालत सुधरती गई है। पश्चिम बंगाल में पहले सत्ता बड़े आंदोलनों से बदलती रही है, लेकिन इस बार विधानसभा चुनाव में कुछ हजार वोट बदलने से भी नतीजा बदल सकता है। पिछले विधानसभा चुनाव के आंकड़ों पर नजर डालें तो यह पता चलता है कि इस बार भारतीय जनता पार्टी और तृणमूल कांग्रेस क्यों जीत के दावे कर रही है। बंगाल चुनाव में हार-जीत पार्टियों के साथ राजनेताओं के भविष्य का फैसला भी करेगी। 26 का चुनाव टीएमसी के साथ अभिषेक बनर्जी के लिए भी महत्वपूर्ण है। ममता बनर्जी से भी ज्यादा। चार दशक से ज्यादा समय तक राजनीति कर चुकीं ममता बनर्जी अंतिम लड़ाई लड़ रही हैं, मगर अभिषेक आने वाले समय के लिए लड़ रहे हैं।

57 सीटें तय करेंगी भाग्य

आमतौर पर चुनाव के दौरान सभी राजनीतिक दल जीत का दंभ भरते हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल के चुनावी आंकड़े बताते हैं कि यहां हर एक वोट जरूरी है। इसलिए, सभी पार्टियां एक-एक वोट के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं। 21 के चुनावों की बात करें तो 57 सीटों पर महज 8 हजार वोटों से हार-जीत का फैसला हुआ था। इस बार भी इन्हीं सीटों पर सभी की नजरें टिकी हैं। यहां थोड़ा बदलाव बड़ा अंतर पैदा कर सकता है। पिछली बार इन 57 में से 29 सीटें टीएमसी और 28 सीटें भाजपा के पाले में गई थीं। इनमें से 19 सीटें ऐसी थीं, जहां प्रत्याशियों की हार-जीत का अंतर तीन हजार से भी कम वोटों का रहा था। उन 19 में से 12 बीजेपी और 7 सीट टीएमसी के खाते में गई। यानी कड़े मुकाबले में भाजपा का प्रदर्शन बढ़िया रहा।

बूथ मैनेजमेंट पर भी टिका चुनाव

इस बार का चुनाव बड़े मुद्दों और नारों के साथ-साथ बूथ मैनेजमेंट पर भी टिका है। 21 के विधानसभा चुनावों में टीएमसी ने 213 और बीजेपी 77 सीटों पर जीत हासिल की थी।

पूरे विपक्ष को निशाने पर लेते हैं बनर्जी

अभिषेक बनर्जी तेज-तर्रार नेता हैं और विरोधियों पर तीखे हमले करते हैं। पार्टी के कार्यकर्ताओं में उनकी अच्छी पकड़ हैं। विधानसभा चुनाव में वह आक्रमक शैली में प्रचार कर रहे हैं। वह चुनाव आयोग और एसआईआर के खिलाफ पार्टी के नैरेटिव को मजबूती से रखते हैं। बीजेपी के साथ वह कांग्रेस और वाम दल पर तल्ख हमले करते हैं। राजनीतिक एक्सपर्ट मानते हैं कि यह रणनीति उनकी बेहतर प्लानिंग को दिखाती है क्योंकि वह कांग्रेस-वाम दल को फायदा नहीं देना चाहते हैं। वोटिंग से पहले उन्होंने एक दांव से टीएमसी की बड़ी चिंता भी दूर कर दी। कुछ दिन पहले तक यह माना जा रहा था कि हुमायूं कबीर और एआईएमआईएम के गठबंधन से टीएमसी को नुकसान हो सकता है। मगर हुमायूं कबीर के वीडियो ने खेल ही पलट गया। AIMIM ने हुमायूं कबीर से नाता तोड़ लिया। बाबरी घटना 1992 में हुई थी। हुमायूं कबीर 2019 में बीजेपी के उम्मीदवार बने तो क्या उन्होंने एक पल भी यह नहीं सोचा कि वे उन्हीं लोगों से हाथ मिला रहे हैं, जिन्होंने बाबरी ढांचे को गिराया था? बंगाल का मुसलमान अब सच जान गया है।

कम अंतर पर भाजपा भारी

पश्चिम बंगाल में पिछले विधानसभा चुनाव में कई ऐसी सीटें थीं, जहां प्रत्याशियों के जीत-हार का अंतर हजार वोटों का ही रहा। बांकुड़ा सीट से बीजेपी प्रत्याशी ने 1,468 वोटों से जीत हासिल की थी। कुल्टी में मुकाबला बेहद दिलचस्प रहा और अंत में बीजेपी के उम्मीदवार 679 वोटों से विजयी हुए। टीएमसी छोड़कर भातपा में आए शुभेंदु अधिकारी ने अपनी पूर्व प्रमुख ममता बनर्जी को 1,956 वोटों से हराया था। कूचबिहार में रोमांचक मुकाबला हुआ था। बीजेपी के निशीथ प्रमाणिक ने सिर्फ 57 वोटों से जीत दर्ज की थी। राजनीतिक विश्लेषक इन कम मार्जिन वाली सीटों को खतरे के साथ अवसर भी बताते हैं। बीजेपी और टीएमसी दोनों इस मौके को भुनाना चाहती हैं। एक तरफ भातपा जहां एंटी इनकंबेंसी और अवैध घुसपैठ का मुद्दा बनाकर फायदा तलाश रही है, वहीं टीएमसी भी पूरी आक्रामकता के साथ चुनावी मैदान में है। टीएमसी इस बार चुनाव को पश्चिम बंगाल बनाम केंद्र का रंग देने की कोशिश कर रही है।

ममता बनर्जी से ज्यादा अभिषेक बनर्जी पर दबाव

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस सबसे मुश्किल चुनाव लड़ रही है। 11 के बाद 026 में ऐसा मुकाबला हो रहा है, जब मुख्य विपक्षी दल बनी बीजेपी भी पूरी ताकत झोंक रही है। बीजेपी के पास प्रचार करने वाले नेताओं की फौज है। केंद्रीय मंत्री, संगठन के नेता और अन्य राज्यों के सीएम बारी-बारी बंगाल का दौरा कर रहे हैं। दूसरी ओर, टीएमसी की स्टार प्रचारक खुद ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी हैं। उनके साथ टीएमसी सांसद, विधायक और मंत्रियों ने मोर्चा संभाल रखा है।

कांग्रेस भी कुछ गैर-बीजपी वोटों में सेंधमारी कर सकती

कांग्रेस भी कुछ गैर-बीजपी वोटों में सेंधमारी कर सकती है। इससे TMC की मुश्किलें बढ़ेंगी। हुमायूं कबीर की आम जनता उन्नयन पार्टी और असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम ने पहले गठबंधन किया था, लेकिन कबीर के एक कथित स्टिंग के बाद एआईएमआईएम ने गठबंधन तोड़ दिया। इसका टीएमसी पर कितना असर होता है, यह भी देखना होगा। कुछ हजार वोटों से जीत-हार तय होने वाली सीटों पर ये छोटे फैक्टर बड़ा असर दिखा सकते हैं।

कैंडिडेट चयन से प्रचार तक निभा रहे हैं भूमिका

इस चुनाव में अभिषेक बनर्जी जिलों में दौरों में भाषणों से ज्यादा वह जनसंवाद पर फोकस कर रहे हैं। टीएमसी नेताओं के मुताबिक, अभिषेक बनर्जी ने इस चुनाव में उम्मीदवार के चयन से लेकर प्रचार की रणनीति बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है। बीजेपी ने ममता बनर्जी को भवानीपुर में घेरने के लिए सुवेंदु अधिकारी को उतारा है। इसके जवाब में अभिषेक बनर्जी ने नंदीग्राम में सुवेंदु के खिलाफ पवित्रकर को उम्मीदवार बनाया। पवित्रकर पहले सुवेंदु के करीबी रहे हैं। इस चुनाव में वह भबानीपुर में प्रचार की निगरानी कर रहे हैं ताकि दोबारा नंदीग्राम जैसी स्थिति नहीं आए। बनर्जी का दावा है कि इस चुनाव में टीएमसी 2021 के मुकाबले ज्यादा सीटों से सरकार में वापसी करेगी। 2026 के चुनावों में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे पार्टी के भीतर नेतृत्व की अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कम मार्जिन वाली 47 दक्षिण बंगाल में हैं, उत्तरी बंगाल में ऐसी केवल 10 सीटें

कम मार्जिन वाली 57 सीटों में से 47 दक्षिण बंगाल में हैं। उत्तरी बंगाल में ऐसी केवल 10 सीटें हैं। दक्षिण को टीएमसी का गढ़ माना जाता रहा है। बीजेपी इसलिए भी यहां थोड़ी ज्यादा मेहनत कर रही है। टीएमसी के सामने कम मार्जिन वाली सीटों पर बढ़त बरकरार रखते हुए सत्ता बचाने की चुनौती है। कहा जा रहा है कि जिन सीटों पर टीएमसी और बीजेपी के बीच सीधा मुकाबला है, वहां असल परीक्षा होगी क्योंकि, यह मुकाबला त्रिकोणीय या बहुकोणीय मुकाबलों से अलग है।

अभिषेक बनर्जी के लिए जरूरी है जीत

पश्चिम बंगाल चुनाव प्रचार में बीजेपी कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, महिला सुरक्षा और रोजगार के मुद्दे के साथ आगे बढ़ रही है। 15 साल से सत्ता संभाल रही तृणमूल कांग्रेस एसआईआर और बंगाली अस्मिता से जुड़े मुद्दों से बीजेपी के नैरेटिव को काउंटर कर रही है। ममता बनर्जी ताबड़तोड़ जनसभाओं को संबोधित कर रही हैं, मगर इस चुनाव में अभिषेक बनर्जी की कड़ी परीक्षा होने वाली है। टीएमसी में नंबर दो की हैसियत रखने वाले अभिषेक बनर्जी को पार्टी के नेता भी उत्तराधिकारी मानते हैं। 71 साल की ममता बनर्जी अगर उम्र के इस पड़ाव पर चुनाव हारती हैं तो पार्टी के साथ अभिषेक बनर्जी की राजनीति को भी धक्का लगेगा। अगर टीएमसी चौथी बार चुनाव जीतने में सफल होती है तो युवा अभिषेक बनर्जी के लिए पार्टी को संभालने और नेतृत्व का लंबा समय मिल जाएगा।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

अपने गीतों से लोगों को प्रेरित करती रहेंगी आशा ताई

> **भारतीय संगीत को एक महासागर माना जाए तो आशा भोसले उसमें बहती वह नदी थीं, जिसने हर शैली को अपने भीतर समेट लिया। क्लासिकल से लेकर पॉप, जैज से लेकर गजल और कव्वाली तक, उन्होंने हर विधा में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी। यह मानना कठिन है कि एक ही स्वर इतनी विविधताओं को इतनी सहजता से व्यक्त कर सकता है, पर आशाजी ने इसे संभव कर दिखाया।**

भारतीय संगीत के आकाश का एक चमकता सितारा सुर सम्राज्ञी आशा ताई यानी आशा भोंसले आखिर शरीर रूप से पंचभूत में समा गया पर उनकी आवाज जब तक दुनिया रहेगी तब तक गूंजती रहेगी। पूर विश्व के जनमानस में एक अमिट छाप छोड़ने वाली मशहूर भारतीय गायिका आशाजी ने हजारों गीतों के माध्यम से 80 सालों तक लोगों को मंत्रमुग्ध किया। वह सुरकोकिला लता मंगेशकर की छोटी बहन थीं। अपनी बड़ी बहन से अलग पहचान बनाने वाली आशा ने जीवन में कभी निराशा को हावी नहीं होने दिया। कई सामाजिक व पारिवारिक झंझावातों से निकल कर उन्होंने जिंदादिली के साथ संगीत का सफर तय किया। वह अपने आप में एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व थीं। उन्होंने 90 साल की उम्र में संगीत का एक बड़ कन्सर्ट करके यह दिखा दिया कि जोश व जज्बे के आगे उम्र सिर्फ नंबर है। वह कई पीढ़ियों को पंसद थी व आगे भी रहेंगी। स्वर की वह चंचल चिड़िया, जन-जन को चमत्कृत करने वाली आवाज जिसने दशकों तक हर हृदय में मधुरता के बीज बोए, आज भले ही भौतिक रूप से हमारे बीच न हो, पर उसकी गूंज अनंत में विलीन होकर भी अमर बनी हुई है।

आशा भोसले केवल एक गायिका नहीं थीं, वे भारतीय आत्मा की वह स्वर-लहरी थीं, जो हर संस्कृति, हर भावना और हर युग में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रही। वे एक बेमिसाल गायिका, अनगिनत लोगों की आशा एवं अभिलाषा की करिश्माई आवाज बनकर करीब 12 हजार गीतों का सृजन कर विश्व रिकार्ड बनाया। हृदयाघात के कारण उनका जाना केवल एक कलाकार का जाना नहीं, बल्कि भारतीय संवेदना के एक पूरे युग का अवसान है, परंतु यह अवसान भी किसी अंत का नहीं, बल्कि उस अमरत्व का संकेत है जहाँ कलाकार अपने शरीर से परे होकर अपनी कृति में जीवित रहता है। अभी न जाओ छोड़ कर जैसे गीत आज करोड़ों हृदयों की सच्ची पुकार बन गए हैं। जिनकी आवाज ने विरह को भी मधुर बना दिया, आज उन्हीं के बिछोह में संसार भाव-विह्वल है। आशा जी की आवाज में एक अद्भुत जीवंतता थी, वह कभी किशोरी की चंचलता बन जाती तो कभी विरहिणी की करुण पुकार। उनके गीतों में जीवन की सम्पूर्णता समाहित थी-हंसी, आंसू, प्रेम, पीड़ा, श्रृंगार और भक्ति का ऐसा समन्वय जो दुर्लभ है। यही कारण है कि उनकी गूंज केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि विश्व के अनेक देशों में लोग उनके गीतों को गुनगुनाते रहे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

पाकिस्तान को लेकर भारतीय रवैये के प्रश्न

ज्योति मल्होत्रा

पुराने 'बुरे' वक्त में, जब भारत और पाकिस्तान के आम नागरिकों को इजाजत थी कि चाहें तो लंच लाहौर में, डिनर पटियाला में, चाहें तो कराची में किसी शादी समारोह में शिरकत करें या फिर कादियां में किसी की मैयत में भाग लें। आप अक्सर ऐसी छोटी-मोटी बातों से सुना करते थे- लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पढ़ा वह आतंकवादी उमर शेख जिसे आईसी 814 के अपहृत यात्रियों के बदले रिहा किया गया था, वह इस्लामाबाद में किताबों की मशहूर दुकान चला रहा है-कि पाकिस्तानियों को पाकिस्तान और चीन के बीच गहरे, रणनीतिक संबंधों पर खूब नाज है। वे कहते हैं- दोनों देशों का 'सदाबहार रिश्ता' हिमालय से ऊंचा, समुद्र से गहरा और शहद से मीठा है।

आज की उलझी सी दुनिया में, यह बात 'धुरंधर-3' (सीक्वल) से उठाई गई पंक्ति लग सकती है - मुगालता न रहे कि आदित्य धर पहले से पाकिस्तान के प्रति भारत के जुनून के बारे में विस्तार से लिख रहे होंगे; इस सच्चाई के बावजूद कि अपने इस पश्चिमी पड़ोसी के साथ हमारे किसी किस्म के आधिकारिक संबंध नहीं। तो जहां तक, इस्लामाबाद में , जो 39 दिनों तक चली लड़ाई के बाद अमेरिका और ईरान के बीच प्रत्यक्ष शांति वार्ता का स्थल रहा, वहां केवल तीन देशों के प्रतिनिधि मौजूद रहे, सर्वशक्तिमान अमेरिकी (जिसका प्रतिनिधित्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने किया, बुरी तरह तबाह हो चुके लेकिन फिर भी अजेय ईरानियों का नेतृत्व वहां की संसद के सभापति मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने किया। पाकिस्तान - वहीं कुछ और भी मुल्क होंगे, जिन्होंने परदे के पीछे इस फिल्म में ज्यादा अहम किरदार निभाया। चीन, रूस, इस्राइल, लेबनान, सऊदी अरब, यूएई। जरा इन नामों पर नजर डालें, कि किस प्रकार आगा खान डेवलपमेंट नेटवर्क द्वारा संचालित एक होटल में वैश्विक व्यवस्था में हलचल हुई होगी-यहां बात आगा खान की, इतिहास में रुचि रखने वाले बुजुर्गों को याद होगा कि वे भारतीय थे। वार्ता कक्ष में चीन के मौजूद न होने की वजह यह है कि वह बाहर रहकर तगड़ी भूमिका निभा रहा है- यानि पाकिस्तान का साथ।

चीन कई दशकों से, पाकिस्तान को संकटों से उबारता आया है; उसके लिए सड़कें, हाईवे व बंदरगाह बनाए, और सैन्य निवेश किया, उसकी वायुसेना, उसकी परमाणु एवं मिसाइल क्षमता भी विकसित करवाई- यह इस्लामाबाद के

एफ-6 इलाके के एक रेस्तरां में कॉफी पीते हुए, पाकिस्तानी भी कबूलते हैं कि अपने 'सदाबहार दोस्त' के लिए पाकिस्तान महज ग्राहक राष्ट्र है। लेकिन यदि पाकिस्तान के संबंधित पक्षों से रिश्ते बढ़िया न होते तब चीन शांति वार्ता में इतनी अहम भूमिका नहीं निभा पाता। यही वजह कि पश्चिम एशिया में हुए युद्ध से दो सबक हैं। पहला, विनम्र रहें, घमंडी न बनें। (देंग शियाओपिंग ने अपने दिशा-निर्देश ताओगुआंग यांगहुई के जरिए इसे खूबसूरती से समझाया था अपनी ताकत छिपाकर रखें और सही समय का इंतजार करें। केवल अमेरिका व इस्राइल ही नहीं जिन्हें अपने से कहीं ज्यादा कमजोर ईरान के सामने झुकने को विवश होना पड़ा। बात पड़ोस की करें तो, जैसे विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने पाकिस्तान को 'दलाल' कहकर कटाक्ष किया, इससे अब भारत को असहज स्थिति का सामना करना पड़ सकता है; क्योंकि वही 'दलाल' बीते कुछ दशकों की सबसे अहम वैश्विक वार्ताओं में से एक में बिचौलिए की भूमिका निभा रहा है। मीडिया जगत में मेरे कई साथी भी इस बारे असमंजस में हैं कि आज पाकिस्तान की भूमिका का वर्णन कैसे किया जाए- क्या वह शक्तिशाली मध्यस्थ है? एक महत्वहीन संदेशवाहक? कोई अप्रत्यक्ष सहयोगी? या फिर हाशिए पर आता एक कमजोर राष्ट्र, जो अकाल, युद्ध एवं आतंकवाद की मार झेल रहा है? अब जबकि धुरंधर-2 बॉक्स ऑफिस पर एक हजार करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर चुकी है, शायद उस समय असली सवाल बनता है कि यदि हमें पाकिस्तान से नफरत होनी चाहिए, तब फिर उसको लेकर इतना जुनून क्यों? पश्चिम एशिया युद्ध से मिलने वाला दूसरा सबक है कि भारत और पाकिस्तान जैसे 'द्वितीय श्रेणी' राष्ट्र किसी एक पक्ष के पाले में होना गवारा नहीं कर सकते।

लगता है, पश्चिम एशिया संकट से भारत ने यह सबक सीख लिया ; क्योंकि शुरू में इस्राइल की ओर झुकाव के बाद, अब तटस्थता वाले केंद्र-बिंदु की ओर सरकने की कोशिश हो रही है। यही वजह है, यह बात दिमाग को कचोटती है कि जिस दिन पाकिस्तान, ईरान और अमेरिका के बीच युद्धविराम कराने में बिचौलिए की भूमिका निभा रहा था, ठीक उसी दिन विदेश मंत्री जयशंकर संयुक्त अरब अमीरात में क्यों मौजूद थे- जबकि इस युद्ध दौरान संयुक्त अरब अमीरात, ईरान के निशाने पर रहने वाले पसंदीदा लक्ष्यों में से एक था; क्योंकि उसे बतौर अमेरिका के सहयोगी देखा जा रहा था और नतीजतन इस्राइल को भी।

बच्चों की बुद्धिमत्ता और मानसिक विकास पर असर

ज्ञानेंद्र रावत

वायु प्रदूषण अब एक गंभीर और जानलेवा समस्या बन चुका है। इसका असर अब हृदय, फेफड़े, सांस, त्वचा, दमा, पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह हड्डियों, श्वसन प्रणाली और प्रजनन तंत्र को भी प्रभावित कर रहा है। यह शरीर के हर अंग को प्रभावित कर रहा है और अब यह कैंसर और मेटाबॉलिक विकार को भी पार कर चुका है। इससे मस्तिष्क पर भी गंभीर असर पड़ रहा है, जिससे डिमेंशिया का खतरा बढ़ गया है। कारण यह है कि अब वातावरण में मानक से ढाई गुना ज्यादा प्रदूषक कण मौजूद हैं। यह मानसिक विकार के साथ-साथ बच्चों की बुद्धिमत्ता पर भी असर डाल रहा है। दुनिया के शोध-अध्ययन प्रमाणित करते हैं कि वायु प्रदूषण बच्चों के मानसिक विकास के लिए गंभीर खतरा है। यह उनकी बुद्धिमत्ता, याददाश्त, एकाग्रता और सीखने की क्षमता को कम कर देता है।

प्रदूषित हवा में मौजूद सूक्ष्म कण बच्चों के दिमाग के विकास में बाधा डालते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी भाषा, कौशल, मूड नियंत्रण और व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। उच्च वायु प्रदूषण और गंदी हवा में रहने वाले बच्चों के आईक्यू स्कोर में मौजूद प्रदूषक तत्वों के कारण बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन, उनकी सोचने-समझने की क्षमता और व्यवहार पर नकारात्मक असर डालते हैं। यही नहीं, अत्यधिक सक्रियता, खराब स्मृति और ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई भी पैदा हो सकती है। यह स्थिति अवसाद और चिंता के जोखिम को और बढ़ा देती है। यातायात से संबंधित वायु प्रदूषण इन समस्याओं की बढ़ोतरी में नकारात्मक भूमिका निभाता है। एनपीजे क्लीन एयर नामक शोध में खुलासा हुआ है कि वायु प्रदूषण के कारण इंसान की सोचने-समझने की क्षमता, यानी आईक्यू, पर भी असर पड़ रहा है। बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने कुल 134 देशों में स्थित 7800 से अधिक शहरों में सेटेलाइट से सूक्ष्म कणों के लांग-लीनियर मॉडल के इस्तेमाल कर गणना की कि वायु प्रदूषण का आईक्यू पर कितना असर हो सकता है। वैज्ञानिकों ने कहा है कि हवा में मौजूद पीएम 2.5 (सूक्ष्म कण) के कारण पूरी दुनिया की आबादी को 65 अरब आईक्यू अंक का नुकसान हो रहा है।

उनके अनुसार, पीएम कण इतने सूक्ष्म होते हैं कि वे शरीर के माध्यम से सीधे मस्तिष्क तक पहुंच रहे हैं। इससे दिमाग में आक्सीडेटिव स्ट्रेस और सूजन पैदा हो रही है। धूल के इन कणों में कैडमियम, मैगनीज और आर्सेनिक जैसी जहरीली धातुएं होती हैं, जो बच्चों के मानसिक विकास के लिए बेहद हानिकारक हैं। दरअसल, वैज्ञानिकों ने यह शोध 'ईक्यू' को एक संख्या मानकर किया है, जो यह बताती है कि किसी व्यक्ति की सोचने, समझने, तर्क करने और समस्याओं को सुलझाने की क्षमता उसकी उम्र के अन्य लोगों की तुलना में कितनी है। शोध में पाया गया कि हवा में मौजूद पीएम 2.5 के हर एक माइक्रोग्राम के बढ़ने पर आईक्यू स्कोर में गिरावट आई है। वैज्ञानिकों के अनुसार, प्रति व्यक्ति आईक्यू हानि का स्तर उन्नत देशों में ज्यादा है, जहां पीएम 2.5 का स्तर बहुत ज्यादा है। भारत में अत्यधिक प्रदूषण के कारण आईक्यू का नुकसान 20 अंक तक पहुंच गया है।

कम और मध्यम आय वाले देश इस संकट की सबसे ज्यादा मार झेल रहे हैं। इससे बच्चों का विकास सबसे ज्यादा प्रभावित होगा। यही नहीं, सूक्ष्म कणों के असर से गर्भवती महिलाओं पर भी यह ज्यादा खतरा बन सकता है। गर्भावस्था के दौरान सूक्ष्म कणों का प्रभाव (1 से 6 अंक की हानि) या शराब के सेवन (3 से 7 अंक की हानि) जैसे स्थापित जोखिम कारकों के समान है। विकासशील देशों पर प्रदूषण का सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है। वहां यह नुकसान 19 अंक तक हो सकता है, जबकि वैश्विक औसत 1 अंक से 2 अंक के बीच है। सबसे दुखदायी यह है कि 15 साल से कम उम्र के लगभग 2.02 करोड़ बच्चे इस प्रदूषण के शिकार हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, आज 93 फीसदी बच्चे प्रदूषित हवा में सांस लेने को मजबूर हैं। वायु प्रदूषण से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याएं अक्सर एयरोसोल से संबंधित होती हैं। एयरोसोल हवा में निलंबित सूक्ष्म ठोस या तरल लवण होते हैं। इनका आकार कुछ नैनोमीटर से लेकर कई माइक्रोमीटर तक हो सकता है। एयरोसोल मानव आंखों को मुश्किल से दिखाई देते हैं। इनमें धुआं, कोहरा और औद्योगिक प्रदूषण कण शामिल होते हैं। ये कण जलवायु, मौसम और शरीर में विषाक्तता से संबंधित प्रतिक्रियाओं को जन्म देते हैं।

एयरोसोल रसायनों के कारण श्वसन संबंधी, लीवर, तंत्रिका तंत्र, आंख और त्वचा की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसके प्रभाव से पौधे और जानवर भी अछूते नहीं रहते। अब सर्दियों के दिनों में, उत्तरी भारत के मुकाबले साफ माने जाने वाले देश के दक्षिणी राज्यों के प्रमुख शहरों जैसे चेन्नई और बंगलुरू में वायु गुणवत्ता बिगड़ने के संकेत मिल रहे हैं, जो एक खतरनाक नया जोखिम है। इसके पीछे मौसम को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। सीपीसीबी के एयर क्वालिटी मानीटरिंग डेटा पर आधारित संस्था क्लाइमेट ट्रेंड्स के विश्लेषण के अनुसार, मौसम की बदलती स्थितियां प्रदूषण के स्तर में 40 फीसदी तक बदलाव ला सकती हैं। देश के प्रमुख शहरों के विश्लेषण से यह खुलासा हुआ है कि वायु प्रदूषण को केवल उत्सर्जन की समस्या मानना अधूरा दृष्टिकोण है। असल में उत्सर्जन और मौसम के बीच की परस्पर क्रिया ही वायु गुणवत्ता को नियंत्रित करती है।

पैर की नस चढ़ने पर करें ये योगासन

कभी-कभी अचानक पैरों की नस चढ़ जाना बहुत ही असहज और दर्दनाक अनुभव हो सकता है। ये स्थिति तब होती है जब नसों में खिंचाव आ जाता है, जिससे पैरों में तेज दर्द और झनझनाहट महसूस होती है। इसे ठीक करने के लिए बहुत से आसान उपाय हैं, जिनमें योगासन भी बेहद प्रभावी साबित हो सकते हैं। योग के कुछ सरल आसन आपको इस दर्द से राहत दिला सकते हैं और नसों के खिंचाव को कम करने में मदद कर सकते हैं। इन आसनों को नियमित रूप से करने से आप नसों के दर्द और ऐंठन से बच सकते हैं।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन

मांसपेशियों की जकड़न को कम करने और लचीलापन लाने के लिए अर्ध मत्स्येंद्रासन का अभ्यास कर सकते हैं। इससे पैरों और उंगलियों की नस नहीं चढ़ती है। इस आसन के अभ्यास के लिए समतल स्थान पर बैठकर एक पैर मोड़ें और दूसरी ओर घुमाएं, फिर विपरीत हाथ से पकड़ें। अर्ध मत्स्येंद्रासन योग की मदद से रीढ़ की हड्डी को मजबूत बनाने में मदद मिलती है। इस योग की मदद से पाचन क्रिया में सुधार होता है। अर्ध मत्स्येंद्रासन योग की मदद से डायबिटीज को कंट्रोल किया जा सकता है।

ताड़ासन

ताड़ासन, जिसे माउंटेन पोज भी कहा जाता है, एक सरल लेकिन प्रभावी योगासन है। ये पूरे शरीर को खींचने और लंबा करने का कार्य करता है। ताड़ासन शारीरिक संतुलन और शरीर की मुद्रा सुधारने के लिए बहुत लाभकारी है। ये आसन पैरों और रीढ़ की हड्डी को मजबूती देने में मदद करता है और नसों के खिंचाव से राहत प्रदान करता है। ताड़ासन करने के लिए सबसे पहले सीधे खड़े होकर अपने पैरों को थोड़ा खोलें। अब अपने पैरों के अंगूठों से लेकर सिर तक पूरी शरीर की लंबाई को खींचते हुए खड़े हों। दोनों हाथों को शरीर के पास रखें और फिर धीरे-धीरे दोनों हाथों को ऊपर की ओर उठाएं। दोनों हथेलियां आपस में मिलाकर ऊपर की ओर खिंचें। इस स्थिति में कुछ देर (30 सेकंड से 1 मिनट) के लिए खड़े रहें और गहरी सांसें लें। धीरे-धीरे वापस सामान्य स्थिति में लौटें।

त्रिकोणासन

यह आसन पैरों की मांसपेशियों को मजबूत करता है और रक्त संचार बेहतर करता है। त्रिकोणासन के अभ्यास के लिए दोनों पैरों को फैलाकर खड़े हो जाएं। एक हाथ ऊपर और दूसरा नीचे ले जाकर त्रिभुज का आकार बनाएं।

पद्मासन

पद्मासन, जिसे लोटस पोज़ भी कहा जाता है, एक बहुत ही प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण योगासन है। ये ध्यान और शांति को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से किया जाता है। पैरों में नस चढ़ने और खिंचाव से राहत पाने के लिए भी ये आसन प्रभावी है। पद्मासन करने के लिए सबसे पहले एक समतल जगह पर ध्यान से बैठें और दोनों पैरों को सामने फैलाकर रखें। अब एक पैर को मोड़ते हुए अपने कूल्हे के पास रखें और दूसरे पैर को भी मोड़कर पहले पैर के ऊपर रखें। इस तरह दोनों पैर एक-दूसरे के ऊपर रखे जाएंगे। दोनों हाथों को घुटनों पर रखें, और शरीर को सीधा रखें। यदि आप अधिक आराम महसूस करना चाहते हैं, तो दोनों हाथों की उंगलियां मुड़ी हुई स्थिति में रखें। अब गहरी सांस लें और धीरे-धीरे अपनी आंखों को बंद करें, ध्यान केंद्रित करें। इस स्थिति में कुछ मिनटों के लिए आराम से बैठें, और धीरे-धीरे श्वास पर ध्यान केंद्रित करें।

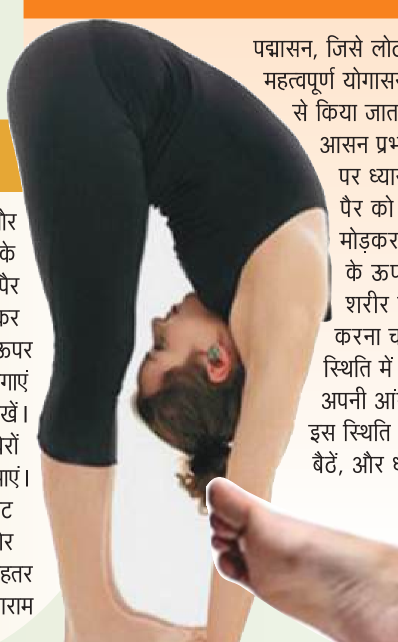

पवनमुक्तासन

यह आसन रक्त संचार बढ़ाता है और मांसपेशियों को आराम देता है। पीठ के बल लेट तक अपने एक पैर को मोड़ें। पैर को छाती से लगाएं और हाथों से पकड़कर खींचे। दोनों हाथों से घुटने को पकड़कर ऊपर सांस लेते हुए पैर के घुटनों को सीने से लगाएं और 10-20 सेकेंड तक सांस रोक कर रखें। घुटने को मुक्त करें फिर सांस छोड़ते हुए पैरों को सीधा करके सामान्य स्थिति में लौट आएं। बेहतर ब्लड सर्कुलेशन हर दिन 5 मिनट पवनमुक्तासन करने से पूरी बॉडी और खासकर पैरों में ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है। इससे पैरों के दर्द से आराम मिलता है।

हंसना मना है

सोनू अपने दोस्त मिंटू को ज्ञान बांट रहा था अगर परीक्षा में पेपर बहुत कठिन हो तो आंखें बंद करो, गहरी सांस लो और जोर से कहो- ये सब्जेक्ट बहुत मजेदार है इसलिए अगले साल फिर पढ़ेंगे।

एक बुढ़िया अम्मा को एक भिखारी मंदिर के बाहर मिला...भिखारी - भगवान के नाम पर कुछ दे दो मां जी, चार दिन से कुछ नहीं खाया। बुढ़िया 500 का नोट निकालते हुए बोली - 400 खुले हैं? भिखारी - हां हैं मां जी, बुढ़िया - तो उससे कुछ लेकर खा लेना...

डॉक्टर - आपका लड़का पागल कैसे हो गया? पिता- वो पहले जनरल बोगी में सफर करता था। डॉक्टर - तो इससे क्या? पिता- लोग बोलते थे थोड़ा खिसको, थोड़ा खिसको, तभी से खिसक गया।

लड़की बंटी से- क्या कर रहे हो? बंटी - मच्छर मार रहा हूं। लड़की - अब तक कितने मारे? बंटी- पांच मारे.. तीन फीमेल और दो मेल। लड़की - कैसे पता चला कि मेल कौन है और फीमेल कौन? बंटी - तीन आईने पर बैठे थे और दो बियर के पास।

तुम ही हो मेरे आंखों के तारे, तुम ही हो मेरे जीने के सहारे, बहुत परेशान हूं मैं मेरे यार, उधारी के पैसे चूका दो सारे।

कहानी | निर्दोष को कैसी सजा

एक राजा के तीन पुत्र थे और अपने उन तीनों पुत्रों में से वह किसी एक पुत्र को राजगद्दी सौंपना चाहता था। पर किसे? राजा ने तीनो पुत्रों को बुलाकर कहा - अगर तुम्हारे सामने कोई अपराधी खड़ा हो तो तुम उसे क्या सजा दोगे? पहले ने कहा कि अपराधी को मौत की सजा दी जाए तो दूसरे ने कहा कि अपराधी को काल कोठरी में बंद कर दिया जाये। अब तीसरे ने कहा कि पिताजी सबसे पहले यह देख लिया जाये कि उसने गलती की भी है या नहीं। इसके बाद उस राजकुमार ने एक कहानी सुनाई कि किसी राज्य में राजा हुआ करता था, उसके पास एक सुन्दर सा तोता था। वह तोता बड़ा बुद्धिमान था, उसकी मीठी वाणी और बुद्धिमत्ता की वजह से राजा उससे बहुत खुश रहता था। एक दिन तोते ने राजा से कहा कि मैं अपने माता-पिता के पास जाना चाहता हूं। वह जाने के लिए राजा से विनती करने लगा। राजा ने कहा ठीक है पर तुम्हें पांच दिनों में वापस आना होगा। तोता अपने माता-पिता से जंगल में मिला और खूब खुश हुआ। पांच दिनों बाद जब वह वापस राजा के पास जा रहा था तब उसने एक सुन्दर सा उपहार राजा के लिए ले जाने का सोचा। वह अमृत फल ले जाना चाहता था। उसने पर्वत पर फल को तोड़ा और रात वहीं गुजारने का सोचा। वह सो रहा था कि तभी एक सांप ने फल को खाना शुरू कर दिया। सांप के जहर से वह फल भी विषाक्त हो चुका था। जब सुबह तोता राजा के पास पहुंचा और कहा- मैं आपके लिए अमृत फल लेकर आया हूं। तभी मंत्री ने कहा कि महाराज पहले देख लीजिए कि फल सही भी है कि नहीं ? राजा ने बात मान ली और फल में से एक टुकड़ा कुत्ते को खिलाया। कुत्ता तड़प-तड़प कर मर गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और अपनी तलवार से तोते का सिर धड़ से अलग कर दिया। वह फल बाहर फेंक दिया। कुछ समय बाद उसी जगह पर एक पेड़ उगा। राजा ने कहा इस पेड़ का फल ना खाएं क्यूंकि उसे लगता था कि यह अमृत फल विषाक्त होते हैं और तोते ने यही फल खिलाकर उसे मारने की कोशिश की थी। एक दिन बूढ़ा आदमी उस पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था। उसने फल खाया और वह जवान हो गया। जब राजा को पता चला तो उसे बहुत ही पछतावा हुआ उसे अपनी करनी पर लज़्ज़ा हुई। तीसरे राजकुमार के मुख से यह कहानी सुनकर राजा बहुत खुश हुआ और तीसरे राजकुमार को सही उत्तराधिकारी समझते हुए उसे ही अपने राज्य का राजा चुना।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष - लाभ के अवसर हाथ आएंगे। रोजगार में वृद्धि होगी। मित्रों की सहायता कर पाएंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापार लाभदायक रहेगा।

वृषभ - जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। आय बनी रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। निवेश शुभ रहेगा। आज के काम कल पर नहीं टालें। विवेक का प्रयोग करें।

मिथुन - जल्दबाजी में कोई भी लेन-देन न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। फालतू खर्च होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कर्क - किसी अपरिचित व्यक्ति पर अंधविश्वास न करें। समय नेष्ट है। नकारात्मकता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

सिंह - शत्रु शांत रहेंगे। धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

कन्या - संतान पक्ष से स्वास्थ्य तथा अध्ययन संबंधी चिंता रहेगी। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। कार्यशैली में परिवर्तन करना पड़ सकता है।

तुला - थकान व कमजोरी रह सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। किसी धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

वृश्चिक - प्रेम-प्रसंग में हड़बड़ी न करें। विवाद हो सकता है। नकारात्मकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। युवक व युवती विशेष सावधानी बरतें।

धनु - कानूनी बाधा संभव है। हल्की हंसी-मजाक करने से बचें। विरोधी सक्रिय रहेंगे। धनहानि किसी भी तरह हो सकती है। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा।

मकर - सुख के साधनों पर व्यय होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि के योग हैं। प्रॉपर्टी के काम बड़ा लाभ दे सकते हैं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। नौकरी में सुख-शांति रहेंगे।

कुम्भ - मनोरंजक यात्रा की आयोजना हो सकती है। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। कारोबार मनोनुकूल रहेगा।

मीन - दूसरों के काम में हस्तक्षेप न करें। दु:खद समाचार प्राप्त हो सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब होने से खिन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। भागदौड़ रहेगी।

'सन ऑफ सरदार 2' में अपने सीन कट जाने से निराश हैं मृणाल ठाकुर

मृणाल ठाकुर इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'डकैत' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म इन दिनों सिनेमाघरों में बनी हुई है। फिल्म में मृणाल ठाकुर की एक्टिंग की जमकर तारीफ भी की जा रही है। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की रफ्तार धीमी ही है। इस बीच हाल ही में मृणाल ने पिछले साल आई अपनी फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' को लेकर बात की। एक्ट्रेस ने खुलासा किया कि फिल्म से उनके सीन काट दिए गए, जिससे उन्हें काफी निराशा हुई। साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि उन्हें पता भी नहीं था कि फिल्म में उनके पति का किरदार एक बहुत वरिष्ठ अभिनेता निभा रहे हैं।

प्रेमा से बात करते हुए मृणाल ठाकुर ने फिल्म में अपने किरदार को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि मुझे पता नहीं था कि एक बहुत वरिष्ठ अभिनेता मेरे पति का किरदार निभाएंगे। क्योंकि इससे मेरा पूरा नजरिया बदल गया। फिल्म से मेरी ऐसी उम्मीदें नहीं थीं। इसलिए मैं इसमें असफल रही। क्योंकि मेरा थोड़ा सा भरोसा डगमगा गया था। लेकिन आपको पता है, मुझे कोई पछतावा नहीं है। जाहिर है कि सन ऑफ सरदार 2 में मृणाल ठाकुर ने राबिया अख्तर का किरदार निभाया था। उनके पति का किरदार फिल्म में चंकी पांडे ने अदा किया था।

मृणाल ठाकुर ने फिल्म में अपने सीन काटे जाने को लेकर भी निराशा जताई। उन्होंने बताया कि फिल्म में उनकी सौतेली बेटी सबा का किरदार निभाने वाली रोशनी वालिया के साथ उनके कुछ अहम सीन काट दिए गए थे। फिल्म की टीम को परिवार जैसा बताते हुए उन्होंने कहा कि मुझे पता ही नहीं था कि मेरे दो अहम सीन काट दिए जाएंगे। जैसे मेरे और रोशनी के बीच एक खूबसूरत सीन है।

वो मेरी बहन की बेटी है और फिल्म में मेरी बहन की मौत हो जाती है, ये सिर्फ कहानी का हिस्सा है। मैं उसकी भलाई के लिए अपनी निजी जिंदगी कुर्बान कर देती हूं। वो कहती है, अच्छा है कि मेरी मां न हो, तुम हो। मैं दुआ करती हूं कि हर लड़की को तुम्हारे जैसी मां मिले, भले ही तुमने मुझे जन्म न दिया हो। लेकिन जिस तरह से तुमने मेरी देखभाल की है। वो सीन फिल्म में नहीं था।

वर्कफ्रंट की बात करें तो अजय देवगन के साथ 'सन ऑफ सरदार 2' करने के बाद मृणाल इस साल 'दो दीवाने सहर' में और 'डकैत' में नजर आई हैं। वहीं उनकी आगामी फिल्मों में वरुण धवन के साथ 'है जवानी तो इश्क होना है' शामिल है।

शूटिंग के दौरान मरते-मरते बची थीं लारा दत्ता, अक्षय कुमार ने बचायी थी जान

कभी-कभी फिल्मी दुनिया की चमक-दमक के पीछे ऐसी कहानियां छिपी होती हैं, जिसे सुनकर हर कोई हैरान रह जाता है। लारा दत्ता की जिंदगी में भी कुछ ऐसा ही हुआ, जब फिल्म की शूटिंग के दौरान वह एक मुश्किल में फंस गईं, जिसमें उनकी जान जाते-जाते बची। लारा दत्ता ने बेंगलुरु से अपनी पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई में अच्छी होने के साथ-साथ उनमें कुछ अलग करने की चाह भी थी, जिसने उन्हें मॉडलिंग की दुनिया की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

मॉडलिंग में कदम रखते ही लारा दत्ता ने अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी। साल 1997 में उन्होंने ग्लैडरैग्स प्रतियोगिता जीती। साल 2000 में उन्होंने मिस यूनिवर्स का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। वह भारत की दूसरी महिला बनीं, जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। इस जीत के बाद वह पूरी दुनिया में मशहूर हो गईं और उनके लिए फिल्म इंडस्ट्री के दरवाजे खुल गए।

साल 2003 में लारा दत्ता ने फिल्म अंदाज से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इस फिल्म में उनके साथ अक्षय कुमार और प्रियंका चोपड़ा नजर आए। पहली ही फिल्म से उन्हें काफी सराहना मिली और बेस्ट डेब्यू एक्ट्रेस का पुरस्कार भी मिला। इसी फिल्म की शूटिंग के दौरान एक ऐसा हादसा हुआ, जिसने उस वक्त सभी को डरा दिया था।

फिल्म के एक गाने की शूटिंग समुद्र के किनारे हो रही थी। लारा को पानी से डर लग रहा था, लेकिन शूटिंग के लिए वह लहरों के बीच गईं। अचानक एक ऊंची लहर आई और उनका संतुलन बिगड़ गया। वह पानी के साथ बहने लगीं। उस समय वहां मौजूद सभी लोग घबरा गए, लेकिन अक्षय कुमार ने बिना समय गंवाए समुद्र में छलांग लगा दी और अपनी जान की परवाह किए बिना लारा को सुरक्षित बाहर ले आए। यह घटना उनके लिए बहुत डरावनी थी, लेकिन इसी ने उनकी हिम्मत को और मजबूत किया।

बॉलीवुड | मन की बात

जब मेरी मां आतंकवादियों के साथ कार में बैठकर घूमी थीं : दिव्या दत्ता

बरसों पहले जब पंजाब आतंकवाद की आग में जल रहा था तब दिव्या दत्ता की मां के साथ एक डरावनी घटना घटी थी। इसी घटना बात का जिक्र दिव्या दत्ता ने हुई हालिया बातचीत में किया। बातचीत के दौरान दिव्या ने पंजाब के उस दौर को याद किया, जब वहां आतंकी घटना हो रही थीं। वह कहती हैं, 'वो दिन बहुत ही मुश्किल भरे थे। मां की सरकारी नौकरी थी और उन्हें पेपर साइन करने पड़ते थे। मां का काम नीचे वाले फ्लोर पर होता था और हम ऊपर रहते थे। मैं उस वक्त दस बार हर दरवाजे और खिड़की को चेक करती थी। कोई भी आवाज होती थी तो दिल दहल जाता था। एक दिन कुछ लोग आए, उन्होंने कहा कि मैडम पेपर साइन करने हैं। मैं मां के दुपट्टे के पीछे छिपकर देख रही थी, उस वक्त सोचा कि आगे आ जाऊं। लेकिन उन लोगों ने कुछ नहीं कहा, बस काम होने पर चले गए। उस दौर में दिव्या दत्ता की मां का सामना आतंकवादियों से भी हुआ था। एक्ट्रेस ने बताया, 'मां एक ट्रेनिंग के लिए लुधियाना से चंडीगढ़ जा रही थीं। कर्फ्यू का माहौल था। मां की जीप पंचर हो गई तो उन्होंने लिफ्ट मांगी। एक गाड़ी सामने ठहरी। मां ने अंदर झांका तो उसमें चार से पांच आदमी बैठे थे। मां ने उनसे पूछा कि वो उन्हें आगे तक छोड़ देंगे? उन लोगों ने एक-दूसरे को देखा और फिर कुछ देर बाद मां को अपनी कार में बैठा लिया। दिव्या ने आगे बताया, रास्ते में मां ने उनसे बात करने की कोशिश की पर वो कुछ बोले नहीं। मां को भी थोड़ा अजीब लगा कि ऐसे कर्फ्यू के माहौल में ये लोग कहां जा रहे हैं। खैर उन्होंने मां को वहां छोड़ा जहां उन्हें जाना था और चले गए। मां अस्पताल पहुंचीं तो कुछ ही घंटों बाद जो हुआ, वो दिल दहला देने वाला था। उनके अस्पताल में पांच लोगों के शव आए और ये उन्हीं के थे जिन्होंने मां को लिफ्ट दी थी। वो आतंकवादी थे जो मां को ड्रॉप करने के कुछ ही देर बाद पुलिस मुठभेड़ में मारे गए। जब हमने यह बात जानी तो दिल ने यही कहा कि मां को कुछ नहीं होना चाहिए, वो मेरी दुनिया हैं, लेकिन यह भी पता चला कि वो कितनी हिम्मती औरत थीं।'

प. बंगाल में हैं सबसे ज्यादा भिखारी दूसरे नंबर पर आता है उत्तर प्रदेश

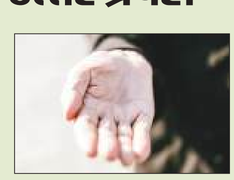

आपने शायद कभी न कभी मंदिरों के बाहर, रेलवे स्टेशन पर, बस स्टैंड या फिर किसी ट्रैफिक सिग्नल पर लोगों को भीख मांगते जरूर देखा होगा। कोई हाथ में कटोरा लिए खड़ा होता है, तो कोई बूढ़ा व्यक्ति सहारे के लिए मदद मांग रहा होता है। वहीं कई बार महिलाएं छोटे बच्चों को गोद में लेकर भीड़ से सहायता की उम्मीद करती नजर आती हैं। यह दृश्य सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के कई देशों में ऐसा देखने को मिलता है। लेकिन जब हम अपने देश की बात करते हैं, तो यहां यह सवाल अक्सर मन में आता है कि आखिर भारत में सबसे ज्यादा भिखारी किस राज्य में पाए जाते हैं और वो अपनी जिंदगी चलाने के लिए कितनी कमाई कर लेते हैं। क्या यह सिर्फ गरीबी का नतीजा है या इसके पीछे और भी कई वजहें छिपी हैं? भारत में भिखारियों को लेकर जो सबसे भरोसेमंद और आधिकारिक आंकड़ा माना जाता है, वह 2011 की जनगणना से मिलता है। इस जनगणना के अनुसार देश में कुल भीखारियों की संख्या 4,13,670 थी। इनमें 2,21,673 पुरुष और 1,91,997 महिलाएं शामिल थीं। हालांकि यह आंकड़ा अब काफी पुराना हो चुका है, लेकिन फिर भी आज तक इसे ही एक आधिकारिक आधार माना जाता है, क्योंकि इसके बाद इस विषय पर कोई बड़ी राष्ट्रीय जनगणना नहीं की गई है। भारत में सबसे ज्यादा भिखारी पश्चिम बंगाल में पाए जाते हैं। यहां कुल भिखारियों की संख्या लगभग 81,244 बताई गई है, जो पूरे देश में सबसे अधिक है। इसके बाद दूसरे स्थान पर आता है उत्तर प्रदेश, जहां करीब 65,835 भिखारी दर्ज किए गए थे। तीसरे स्थान पर आंध्र प्रदेश है, जहां लगभग 30,218 भिखारी पाए गए। अगर आगे के राज्यों की बात करें तो स्थिति कुछ इस प्रकार है। बिहार में लगभग 29,723 भिखारी पाए जाते हैं, जो देश में चौथे स्थान पर आता है। इसके बाद मध्य प्रदेश का नंबर आता है, जहां करीब 28,695 भिखारी दर्ज किए गए हैं और यह राज्य पांचवें स्थान पर है। वहीं राजस्थान में लगभग 25,853 भिखारी पाए जाते हैं, जिससे यह राज्य छठे स्थान पर आता है। ये आंकड़े साफ तौर पर बताते हैं कि भिक्षावृत्ति सिर्फ किसी एक राज्य की समस्या नहीं है, बल्कि यह देश के कई हिस्सों में फैला हुआ एक गंभीर सामाजिक मुद्दा है। भिखारियों की आय का कोई आधिकारिक डेटा उपलब्ध नहीं है, क्योंकि यह पूरी तरह जगह, शहर और वहां मिलने वाली भीड़ पर निर्भर करता है। फिर भी अनुमान के अनुसार एक सामान्य भिखारी रोजाना लगभग 100 से 500 रुपये तक कमा सकता है, जिससे उसकी महीने की कमाई करीब 3,000 से 15,000 रुपये के बीच हो जाती है। वहीं बड़े शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और लखनऊ में यह कमाई और भी ज्यादा हो सकती है। इन शहरों में कुछ भिखारी रोजाना 500 से 1,000 रुपये तक कमा लेते हैं, जिससे उनकी महीने की कमाई लगभग 15,000 से 30,000 रुपये तक पहुंच सकती है।

अजब-गजब | इन देशों में वन क्षेत्र हैं न के बराबर, वजह है अजीबो-गरीब

दुनिया के अनोखे देश जहां नहीं है एक भी पेड़, फिर भी लोग खुलकर लेते हैं सांस

जब भी हम प्रकृति की बात करते हैं, तो सबसे पहले पेड़ों का ख्याल आता है। पेड़ ना सिर्फ हमें ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि गर्मी से भी बचाते हैं, वातावरण को शुद्ध रखते हैं और धरती को जीवंत बनाते हैं। यही वजह है कि पेड़ों को पृथ्वी के फेफड़े कहा जाता है। हम में से ज्यादातर लोग हरी-भरी जगहों पर घूमना पसंद करते हैं और बिना पेड़ों के जीवन की कल्पना भी मुश्किल लगती है। लेकिन सोचिए, अगर किसी पूरे देश में पेड़ ही न हों तो क्या होगा? यह बात सुनने में अजीब लगती है, लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे देश भी हैं जहां पेड़ लगभग नहीं के बराबर हैं। हैरानी की बात यह है कि वहां लोग सामान्य रूप से जीवन जी रहे हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ अनोखे देशों के बारे में।

ग्रीनलैंड- ग्रीनलैंड का नाम सुनते ही दिमाग में हरियाली, जंगल और पेड़-पौधों की तस्वीर आने लगती है। लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग है। ग्रीनलैंड का ज्यादातर हिस्सा सालभर बर्फ से ढका रहता है। यहां दूर-दूर तक आपको बर्फ ही बर्फ नजर आएगी। इस क्षेत्र में इतनी ठंड है कि पेड़ों का उगना लगभग असंभव है। कुछ जगहों पर छोटे-छोटे पौधे या झाड़ियां जरूर मिल जाती हैं, लेकिन बड़े पेड़ों की बात करें तो वो यहां लगभग नहीं के बराबर हैं। इतिहासकारों के अनुसार, इस जगह का नाम ग्रीनलैंड इसलिए रखा गया था ताकि लोग नाम सुनकर आकर्षित हों और यहां बसने के लिए आएं। लेकिन असलियत में यह जगह हरियाली से कोसों दूर है।

कतर: एक बेहद अमीर और मॉर्डन देश है, जो अपनी शानदार इमारतों और लग्जरी लाइफस्टाइल के लिए जाना जाता है। यहां की एयरलाइंस और इंफ्रास्ट्रक्चर दुनिया भर में मशहूर हैं। लोग बहुत पैसा खर्च करते हैं यहां जाने और घूमने के लिए। लेकिन अगर बात करें प्रकृति की, तो कतर में हरियाली बहुत कम देखने को मिलती है। यहां का ज्यादातर इलाका रेगिस्तान है, जहां बारिश भी बहुत कम होती है। ऐसे में पेड़ों का उगना काफी मुश्किल हो जाता है। हालांकि, अब सरकार पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए प्रयास कर रही है। यहां एक बड़े मैन-मेड फॉरेस्ट यानी आर्टिफिशियल जंगल बनाने की योजना पर काम चल रहा है, जिसमें हजारों पेड़ लगाए जाएंगे। कहा जा रहा है कि यह दुनिया के सबसे बड़े मानव-निर्मित जंगलों में से एक हो सकता है।

ओमान: ओमान में भी पेड़-पौधों की संख्या बहुत कम है और यहां प्राकृतिक हरियाली लगभग ना के बराबर देखने को मिलती है। साल 1990 तक स्थिति इतनी खराब थी कि यहां का वन क्षेत्र लगभग शून्य प्रतिशत दर्ज किया गया था, यानी देश में जंगलों का नामोनिशान भी नहीं था। हालांकि समय के साथ पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए कुछ संस्थाओं और संगठनों ने पहल शुरू की है। वे कृत्रिम तरीके से पेड़ लगाने यानी मानव निर्मित वन तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि यहां हरियाली बढ़ाई जा सके। फिर भी, इन प्रयासों के बावजूद ओमान आज भी एक ऐसा देश है जहां हरियाली बहुत कम है और ज्यादातर इलाके सूखे और रेगिस्तानी नजर आते हैं।

अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि इन देशों में लोग बिना पेड़ों के कैसे रह रहे हैं? इसका जवाब है- आधुनिक तकनीक(स्ल्स्त्रद्गह्म्द्ब अद्गष्द्धद्दश्ध्द्यश्द्द4) और प्राकृतिक संतुलन के दूसरे साधन। इन जगहों पर ऑक्सीजन का संतुलन समुद्री हवाओं, छोटे पौधों और वैश्विक वातावरण के जरिए बना रहता है। साथ ही, आज के समय में एयर प्यूरीफिकेशन और ग्रीन टेक्नोलॉजी भी बड़ी भूमिका निभा रही है।

महिला आरक्षण बिल का समर्थन, सरकार का तरीका गलत : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष बोले- विपक्षी दलों को दबाने के लिए सरकार ऐसा कर रही

» कहा- सभी दलों को संसद में एकजुट होकर लड़ना चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि विपक्षी दल महिला आरक्षण के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि सरकार द्वारा विधेयक लाने के तरीके का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह राजनीतिक रूप से प्रेरित है। इंडिया ब्लॉक की बैठक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि हम सभी महिला आरक्षण विधेयक के पक्ष में हैं। लेकिन जिस तरीके से इसे पेश किया गया है, उस पर हमें आपत्ति है। यह राजनीतिक रूप से प्रेरित है। विपक्षी दलों को दबाने के लिए सरकार ऐसा कर रही है। हालांकि हमने महिला आरक्षण विधेयक का लगातार समर्थन किया है, लेकिन हम चाहते हैं कि पहले के संशोधनों को लागू किया जाए। वे परिसीमन को लेकर कुछ चालें चल रहे हैं।

खरगे ने कहा कि हम सभी दलों को संसद में एकजुट होकर लड़ना चाहिए। हम इस विधेयक का विरोध करेंगे, लेकिन हम (महिलाओं के लिए) आरक्षण के खिलाफ नहीं हैं। जिस तरह से उन्होंने विधेयक में परिसीमन को शामिल किया है, उन्होंने जनगणना भी नहीं कराई है। संविधान की सभी शक्तियां कार्यपालिका द्वारा हथियाई जा रही हैं। ज्यादातर, जो शक्तियां संस्थाओं, संसद के पास होनी चाहिए, वे उन्हें इसलिए दी गई हैं ताकि वे किसी भी समय परिसीमन बदल सकें...वे असम और जम्मू-कश्मीर में पहले ही हमें धोखा दे चुके हैं। आरएसपी सांसद एन के प्रेमचंद्रन ने कहा कि परिसीमन विधेयक और संविधान संशोधन विधेयक के ज़रिए अनुच्छेद 81 के खंड 3 में संशोधन किया जा रहा है, जिससे एक नया प्रावधान जोड़ा जा रहा है कि संसद कानून बनाएगी और जनगणना व जनसंख्या का निर्धारण करेगी। इसका मतलब है कि सरकार साधारण बहुमत से ही पूरे देश को नियंत्रित करने के लिए स्वतंत्र हो जाएगी। उत्तर भारत में सीटों की संख्या में भारी वृद्धि होगी, जबकि दक्षिण भारतीय राज्यों में सीटों की संख्या में कमी आएगी क्योंकि उन्होंने भारत सरकार के जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम को वैज्ञानिक रूप से लागू किया है। यह लोकतंत्र विरोधी है। हम उस संविधान संशोधन विधेयक का विरोध करते हैं जिसके तहत परिसीमन किया जाएगा।

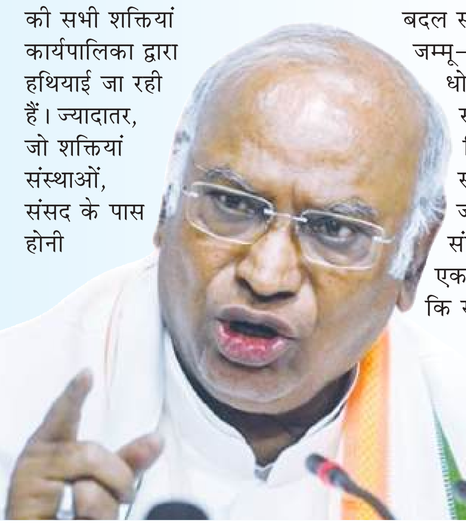

परिसीमन विधेयक पर भी रार

संवैधानिक संशोधन एक खतरनाक कदम : मोहम्मद बशीर

आईयूएमएल सांसद ई. टी. मोहम्मद बशीर ने कहा कि हम परिसीमन विधेयक का विरोध कर रहे हैं क्योंकि यह वास्तव में एक जाल है। वे 23 में भी आरक्षण दे सकते थे, और हम अब भी उसका समर्थन करते हैं। लेकिन साथ ही, यह संवैधानिक संशोधन एक खतरनाक कदम है। हमने इसका (परिसीमन का) पुरजोर विरोध करने का फैसला किया है क्योंकि यह न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है।

लोस सीटों में 50 प्रतिशत की वृद्धि का प्रस्ताव भ्रम : चिदंबरम

कांग्रेस के राज्यसभा सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम ने निष्पक्ष परिसीमन प्रक्रिया की मांग करते हुए लोकसभा सीटों में 50 प्रतिशत की वृद्धि के प्रस्ताव को भ्रम बताया। कोयंबटूर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए पी चिदंबरम ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम में संशोधन और लोकसभा सीटों को 850 तक बढ़ाने के लिए संविधान संशोधन पारित करने हेतु तीन दिवसीय संसद सत्र के समय पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में चुनावों के कारण कई विपक्षी सांसद संसद में उपस्थित नहीं हो पाएंगे। पी चिदंबरम ने कहा कि भाजपा सरकार ने कहा है कि वह बिना विपक्ष के परिसीमन विधेयक पारित करने के लिए सदन बुलाएगी। अगर संसद कल बुलाई जाती है, तो हम इसके प्रावधानों को नहीं देख पाएंगे। हम परिसीमन का विरोध नहीं कर रहे हैं। हम निष्पक्ष परिसीमन चाहते हैं। लेकिन अब अचानक वे कह रहे हैं कि मध्य प्रदेश की सीटें 50 प्रतिशत बढ़ा दी जाएंगी। परिसीमन एक भ्रम और धोखा है। 16 अप्रैल को लोकसभा बुलाकर और इस विधेयक को पारित करके केंद्र सरकार ऐसी स्थिति पैदा करने की कोशिश कर रही है जिससे जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, वहां के विपक्षी सांसद चुनाव में भाग न ले सकें।

हार का सिलसिला तोड़ना चाहेगी मुंबई इंडियंस

» पंजाब किंग्स से मुकाबला आज, रोहित का खेलना संदिग्ध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। पिछले कुछ मैचों में निराशाजनक प्रदर्शन करने वाली मुंबई इंडियंस अब तक अजेय चल रही पंजाब किंग्स की कड़ी चुनौती का डटकर सामना करके आईपीएल में अपना अभियान वापस पटरी पर लाने की कोशिश करेगी। इस बीच रोहित शर्मा का आगामी मुकाबले में खेलना संदिग्ध है। बता दें कि, पिछले मैच में हिटमैन हैमस्ट्रिंग की समस्या से जूझते नजर आए थे, जिसके बाद वह रिटायर्ड हर्ट होकर डगआउट लौट गए थे। क्रिकबज के अनुसार, मुंबई इंडियंस के ओपनर रोहित शर्मा पंजाब किंग्स के खिलाफ होने वाला मैच नहीं खेल पाएंगे।

हालांकि बुधवार शाम को रोहित वानखेड़े स्टेडियम पहुंचे और उन्होंने हल्का-फुल्का अभ्यास किया। वह मंगलवार को टीम के अभ्यास सत्र में शामिल नहीं हुए थे। मुंबई इंडियंस का पावरप्ले में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। उसने चार मैचों में पहले छह ओवरों के महत्वपूर्ण चरण में केवल तीन विकेट लिए हैं। जसप्रीत बुमराह अब तक चार मैचों में विकेट नहीं ले पाया है। ट्रेंट बोल्ट और हार्दिक पंड्या जैसे अनुभवी गेंदबाजों की मौजूदगी के बावजूद गेंदबाज अभी तक प्रभावित नहीं कर पाए हैं। यहां तक की सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा ने काफी हद तक निराश किया है। पिछले सत्र की तरह श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली पंजाब किंग्स ने एक बार फिर अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखा है और उसे हराना आसान नहीं होगा। पंजाब किंग्स के बल्लेबाजों ने अभी तक अच्छा प्रदर्शन किया है। इसका एक नमूना सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ पिछले मैच में देखने को मिला जिसमें उसने पावरप्ले में बिना किसी नुकसान के 93 रन बनाए थे। प्रभसिमरन सिंह और प्रियांश आर्य की जोड़ी खतरनाक नजर आ रही है, जबकि अय्यर के आत्मविश्वास और कूपर कोनोली के आने से उसकी टीम और भी मजबूत हो गई है। पंजाब किंग्स की गेंदबाजी की बात करें तो उसके मुख्य गेंदबाज अर्शदीप सिंह अभी तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं।

लखनऊ को हराकर अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंची आरसीबी

बंगलूरू। रसिख सलाम और भुवनेश्वर कुमार की घातक गेंदबाजी के बाद विराट कोहली की दमदार बल्लेबाजी की बदौलत आरसीबी ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को पांच विकेट से हरा दिया। चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ की टीम 20 ओवर में 10 विकेट पर 146 रन ही बना सकी। जवाब में आरसीबी ने 15.1 ओवर में पांच विकेट पर 149 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ आरसीबी ने अंक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया। पांच में से चार मुकाबले जीतकर आरसीबी ने आठ अंक और +1.503 का नेट रन रेट दर्ज कर लिया। वहीं, लखनऊ की टीम चार अंक और -0.804 के नेट रन रेट के साथ सातवें स्थान पर है।

भीषण अग्निकांडः दो मासूमों की दर्दनाक मौत

» विकास नगर में कई लोगों की गृहस्थी जलकर खाक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क/मो.शारिक

लखनऊ। विकास नगर में भीषण अग्निकांड में दो बच्चों की मौत हुई। देर रात दोनों बच्चों के शव मिले। डीसीपी पूर्वी डॉक्टर दीक्षा शर्मा ने यह जानकारी दी। परिजनों ने पुलिस के सामने की शिनाख्त बच्चों के शवों को पीएम के लिए भेजा गया। जानकारी के अनुसार सतीश की दो बेटिया आग की चपेट में आईं और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। एक बच्ची 2 साल की श्रुति और एक 2 माह की मासूम बच्ची जिंदा जलीं हैं। हादसे के वक्त माता-पिताघर से बाहर थे। दोनों बच्चियां अंदर फंसी रह गईं थीं। देर रात मलबे से दोनों बच्चियों के शव बरामद किए गए बाद में पोस्टमार्टम के लिए भेजे गए। इन बच्चों को परिवार बाराबंकी का रहने वाला था।

ये कई सालों से विकास नगर में रह रहा था। इससे पहले इस आग में झोपड़ियां और

सामान जलकर खाक हो गए जिससे कई लोग प्रभावित हुए। इस भीषण आग मवेशियों में कुत्ते, मुर्गे और बकरियां भी जिंदा जल गए। आग से इलाके में मची अफरा-तफरी, कई लोग हताहत भी हुए। सूचना मिलने के बाद दमकल विभाग की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। हालांकि तब तक कई झुग्गियां जलकर राख हो चुकी थीं और लोगों की वर्षों की मेहनत की कमाई पल भर में खाक हो गई।

धू-धूकर जलीं कई झुग्गियां

आग इतनी तेजी से फैली कि लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला और देखते ही देखते कई झुग्गियां धू-धू कर जलने लगीं। आग की लपटों और धुएं देर से दिखाई दे रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार झुग्गियों में लगी आग कुछ ही मिनटों में पूरी बस्ती में फैल गई। प्लास्टिक की छतें पिघलने लगीं और टीन की चादरें आग की गर्मी से तपने लगीं। लोग अपने घरों से जरूरी सामान निकालने की कोशिश करते नजर आए, जबकि कई लोग बाल्टियों से पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास करते रहे।

राबर्ट वाड्रा को कोर्ट का समन, 16 मई को पेश होने का आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने हरियाणा के शिकोहपुर में विवादित जमीन सौदे से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कारोबारी रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ ईडी द्वारा दायर आरोपपत्र का संज्ञान लिया। विशेष न्यायाधीश सुशांत चांगोत्रा ने वाड्रा और अन्य आरोपियों को 16 मई को अदालत में पेश होने का आदेश दिया है। विस्तृत आदेश का इंतजार है।

प्रवर्तन निदेशालय ने पिछले साल जुलाई में आरोपपत्र दाखिल किया था, जो किसी भी जांच एजेंसी द्वारा 57 वर्षीय वाड्रा के खिलाफ आपराधिक मामले में आरोपपत्र दाखिल करने का पहला मामला था। केंद्रीय एजेंसी ने अपनी जांच के तहत अप्रैल 25 में वाड्रा से तीन दिनों तक पूछताछ की थी।

केजरीवाल की अदालती बहस का वीडियो सोशल मीडिया से हटाने के आदेश

» कोर्ट ने कहा- यह नियम का उल्लंघन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने पुलिस को आदेश दिया कि अरविंद केजरीवाल द्वारा न्यायमूर्ति स्वराना कांता शर्मा के समक्ष एक्साइज पॉलिसी मामले में दी गई बहस का अनधिकृत वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से तुरंत हटा दिया जाए। अदालत ने स्पष्ट किया कि अदालती कार्यवाही की अनधिकृत रिकॉर्डिंग और प्रसारण दिल्ली उच्च न्यायालय के ऑनलाइन सुनवाई नियमों का उल्लंघन है। उच्च न्यायालय के एक अधिकारी ने बताया कि हमने कदम उठा लिए हैं।

केजरीवाल का वीडियो इनमें से एक है। पहले भी हमने कार्रवाई की है और जब भी ऐसी घटनाएं हमारे संज्ञान में आती हैं, हम

कानून प्रवर्तन एजेंसियों को लिखकर कार्रवाई कराते हैं। अधिकारी ने कहा कि सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर वीडियो अपलोड करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। यह आदेश 13 अप्रैल 2026 को हुई सुनवाई के बाद सामने आया, जिसमें केजरीवाल ने व्यक्तिगत रूप से पेश होकर न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा से एक्साइज पॉलिसी मामले से रिक्यूजल की मांग की थी।

महिला आरक्षण संविधान संशोधन बिल पर हंगामा

सत्तापक्ष व विपक्ष में जोरदार तकरार, लोकसभा में सरकार के बिल लाने का प्रस्ताव पास, लोकसभा में विधेयक के पक्ष में 251 वोट, विपक्ष में पड़े 185 वोट

» लोकसभा में तीनों बिल पर वोटिंग कल

» सपा प्रमुख व गृहमंत्री में तीखी तकरार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में महिला आरक्षण से जुड़े मुद्दे पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखी बहस देखने को मिली। समाजवादी पार्टी के सांसद धर्मेंद्र यादव ने बिल का विरोध किया। वहीं सपा चीफ अखिलेश यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिक्र करते हुए बड़ा दावा किया। इन सबके बीच सरकार का संविधान संशोधन बिल लाने का प्रस्ताव पास हुआ है।

बिल पर चर्चा के लिए 251 वोट पड़े जबकि विरोध में 185 वोट पड़े। इसी के साथ तीनों बिल पर एक साथ चर्चा शुरू करने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ। लोकसभा में तीनों बिल पर कल यानी 17 अप्रैल (शुक्रवार) शाम चार बजे वोटिंग होगी। लोकसभा में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक 26 को पेश करने के प्रस्ताव पर मतदान हुआ, जिसमें अधिकतर सांसदों ने सरकार के पक्ष में वोट दिया। विपक्षी सांसदों ने इस विधेयक को पेश करने के फैसले के खिलाफ मतविभाजन (वोटिंग) की मांग की थी, लेकिन वोटिंग में सरकार का पलड़ा भारी रहा। इस तरह लोकसभा ने विधेयक को पेश करने की अनुमति दे दी है और अब इस पर आगे चर्चा की जाएगी। चर्चा की शुरुआत में धर्मेंद्र यादव ने कहा कि महिला आरक्षण के नाम पर जिस तरह कश्मीर और असम में हालात बने, वैसा ही पूरे देश में करने की कोशिश हो रही है। उन्होंने मांग की कि जब तक पिछड़े वर्ग और मुस्लिम महिलाओं को इसमें शामिल नहीं किया जाता, तब तक विपक्ष इसका विरोध करेगा। उन्होंने बिल को वापस लेने और 23 के बिल को लागू करने की भी बात कही।

धर्मेंद्र यादव को रिजिजू का जवाब

सांसद धर्मेंद्र यादव के बयान पर केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने कड़ा जवाब देते हुए कहा कि धर्म के आधार पर आरक्षण असवैधानिक है और ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पूरे देश की महिलाओं की बात होनी चाहिए, सिर्फ मुस्लिम महिलाओं की नहीं।

ओबीसी, दलित और आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधित्व का हिस्सा छीनने नहीं देगी कांग्रेस : राहुल गांधी

केंद्र सरकार द्वारा लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाकर 850 करने और 26 से पहले की जनगणना के आधार पर परिसीमन की अनुमति देने के लिए संविधान संशोधन का प्रस्ताव रखे जाने के मद्देनजर, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस सरकार को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), दलित और आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधित्व का हिस्सा छीनने नहीं देगी और इसे एनडीए का राष्ट्र-विरोधी कदम बताया। एक्स पर एक पोस्ट में राहुल गांधी ने कहा कि उनकी कांग्रेस महिला आरक्षण का स्पष्ट रूप से समर्थन करती है, लेकिन सरकार को परिसीमन केवल 26 की जनगणना के आधार पर ही करना चाहिए, जो वर्तमान में चल रही है। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह का कोई भी कानून लाने से पहले जाति जनगणना को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार जो प्रस्ताव पेश कर रही है, उसका महिला आरक्षण से कोई लेना-देना नहीं है। यह संशोधन परिसीमन और हेरफेर के ज़रिए सत्ता हथियाने का प्रयास है। जाति जनगणना के आंकड़ों को

नज़रअंदाज़ करके हम ओबीसी, दलित और आदिवासी समुदायों की 'हिस्सा चोरी' बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम दक्षिणी, उत्तर पूर्वी, उत्तर पश्चिमी और छोटे राज्यों के साथ भी अन्याय नहीं होने देंगे। गांधी ने दावा किया कि भाजपा पिछड़े समुदायों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं देना चाहती, और साथ ही कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और आरएसएस जाति जनगणना से डरते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि अगर सरकार विधानसभा में महिलाओं के लिए आरक्षण को लेकर गंभीर है, तो उसे नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू करना होगा, जिसे संसद ने 23 में पहले ही पारित कर दिया था। उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रविरोधी गतिविधि है।

पिछड़ों के वोट चाहिए थे तो पीएम ने अपने को पिछड़ा बताया : अखिलेश

जवाब में अखिलेश यादव ने कहा कि जब प्रधानमंत्री को पिछड़ों के वोट चाहिए थे, तब उन्होंने खुद को पिछड़ी जाति से बताया था। समाजवादी पार्टी प्रमुख और कन्नौज सांसद अखिलेश यादव ने सरकार पर जल्दबाजी का आरोप लगाते हुए कहा कि अगर जनगणना कराई जाए और जाति जनगणना सामने आए, तो उसी आधार पर आरक्षण की मांग उठेगी, इसलिए सरकार इससे बचना चाहती है।

अखिलेश व शाह में बहस

अखिलेश के बयान पर गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि कुछ बयान जनता में भ्रम और चिंता पैदा कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनगणना की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और सरकार ने जाति जनगणना का भी निर्णय ले लिया है। उन्होंने धर्मेंद्र यादव के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अभी घरों की गिनती हो रही है, घरों की जाति नहीं होती, लेकिन अगर समाजवादी पार्टी की चले तो वे घरों की भी जाति तय कर दें, उन्होंने यह भी दोहराया कि संविधान धर्म के आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं देता। बहस के दौरान यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने सवाल उठाया कि क्या मुस्लिम महिलाएं 'आधी आबादी' का हिस्सा नहीं हैं, इस पर अमित शाह ने तंज कसते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी चाहे तो सभी टिकट मुस्लिम महिलाओं को दे सकती है, इसमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

पार्टी इस मुद्दे पर अपना रुख पहले ही साफ कर चुकी है : सोनिया गांधी

महिला आरक्षण विधेयक और प्रस्तावित परिसीमन विधेयक को लेकर कांग्रेस सांसद सोनिया गांधी ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी इस मुद्दे पर अपना रुख पहले ही साफ कर चुकी है और अब इस पर उनके पास कुछ और जोड़ने के लिए नहीं है। संसद में इन दोनों अहम विधेयकों को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच चर्चा और राजनीतिक बहस जारी है।

लालू और तेजस्वी यादव को राहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने आईआरसीटीसी घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में राजद प्रमुख लालू यादव, तेजस्वी यादव और अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने पर अपना फैसला फिलहाल टाल दिया है। जिससे लालू-तेजस्वी समेत सभी आरोपियों को फिलहाल राहत मिली है।

अदालत अब इस मामले में आरोप तय करने को लेकर 6 मई को अपना निर्णय सुना सकती है। इस केस में लंबे समय से सुनवाई चल रही है और अब सभी की नजरें अगली तारीख पर टिकी हैं, जब यह स्पष्ट होगा कि आरोप तय होंगे या नहीं। आईआरसीटीसी होटल टेंडर घोटाला वर्ष 4 से 14 के बीच का है, जब लालू यादव केंद्र सरकार में रेल मंत्री थे। आरोप है कि आईआरसीटीसी के दो होटलों के रखरखाव का टेंडर एक निजी कंपनी को देने में अनियमितताएं की गईं। इसके बदले कथित तौर पर लालू परिवार से जुड़ी कंपनी को जमीन या अन्य लाभ पहुंचाए जाने का आरोप है। सीबीआई का दावा है कि टेंडर प्रक्रिया में नियमों की अनदेखी की गई और पद का दुरुपयोग कर लाभ पहुंचाया गया। वहीं, लालू यादव और उनके परिवार की ओर से इन आरोपों को राजनीतिक साजिश बताया जाता रहा है। राजद का कहना है कि केंद्र की सरकार विपक्षी नेताओं को एजेंसियों के जरिए परेशान कर रही है।

अमेरिका को ईरान की धमकी, सेना से करेंगे वसूली

» हम हर पकड़े सैनिक के बदले एक अरब डॉलर वसूलेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। इस्लामाबाद में ईरान के साथ वार्ता असफल होने के बाद अमेरिका ने अरब और ओमान की खाड़ी में ईरानी बंदरगाह से आने और जाने वाले सभी देशों के जहाजों पर नाकाबंदी लगा दी है। अमेरिकी नौसेना के जहाज ओमान की खाड़ी में गश्त कर रहे हैं इस बीच ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई के सैन्य सलाहकार मोहसेन रेजाई ने धमकी दी है कि अगर अमेरिका होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकाबंदी करने का फैसला करता है तो हम अमेरिकी जहाजों को डुबो देंगे साथ ही उन्होंने अमेरिका को ईरानी जमीन पर सेना उतारने को लेकर भी चुनौती दी है।

पिछले महीने मोजतबा खामेनेई ने ईरान के वरिष्ठ अधिकारी मोहसेन रेजाई को सैन्य सलाहकार नियुक्त किया था। उन्होंने तंज कसते हुए सवाल किया कि ट्रंप होर्मुज जलडमरूमध्य के लिए पुलिस बनना चाहते हैं. क्या यह वास्तव में आपका काम है? क्या यह अमेरिका जैसी शक्तिशाली सेना का काम है?। एक सरकारी टीवी को दिए अपने बयान में मोहसेन रेजाई ने कहा, आपके ये जहाज हमारी पहली मिसाइलों से डूब जाएंगे. ये निश्चित रूप से हमारी मिसाइलों की चपेट में आ सकते हैं और हम इन्हें नष्ट कर सकते हैं, उन्होंने ये भी कहा कि अगर संयुक्त राज्य अमेरिका ईरान पर जमीनी आक्रमण शुरू करता है तो यह और अच्छा होगा, क्योंकि हम हजारों अमेरिकी सैनिकों को पकड़ लेंगे और फिर प्रत्येक बंधक के बदले हमें एक अरब डॉलर मिलेंगे। मोहसेन रेजाई ने कहा कि मैं युद्धविराम को बढ़ाने के पक्ष में बिल्कुल नहीं हूं और यह मेरा व्यक्तिगत विचार है।

पोप लियो ने विश्व शांति की अपील की

वहीं पोप लियो ने कहा है कि विश्व शांति के लिए तरस रहा है। उन्होंने एक्स पर लिखा-आइए हिंसा और युद्ध के तर्क को त्याग दें और प्रेम और न्याय पर आधारित शांति को अपनाए।. एक ऐसी शांति जो भय, धमकियों या हथियारों पर आधारित न हो यह शांति निशस्त्रीकरण करने वाली है, क्योंकि यह संघर्षों को सुलझाने, दिलों को खोलने और विश्वास, सहानुभूति और आशा उत्पन्न करने में सक्षम है मैं दृढ़ता से दोहराता हूं कि दुनिया शांति के लिए तरस रही है. युद्ध और उससे होने वाली मृत्यु, विनाश और निर्वासन के दर्द को अब और बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

ट्रंप का दावा- 34 साल बाद इस्राइल-लेबनान वार्ता संभव

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि इस्राइल और लेबनान के नेता 34 साल बाद पहली बार आपस में बातचीत करेंगे। उन्होंने कहा कि यह बातचीत गुरुवार को होने की संभावना है। यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब दोनों देशों के राजनयिक प्रतिनिधियों ने वाशिंगटन में दुर्लभ प्रत्यक्ष वार्ता की, जिसमें इज़राइल के हमलों को रोकने के मुद्दे पर चर्चा हुई।हालांकि, इस कूटनीतिक पहल के बीच इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने संकेत दिया है कि सैन्य कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि उन्होंने सेना को दक्षिणी लेबनान में पूर्व की ओर अभियान और विस्तार करने के निर्देश दिए हैं। इस घटनाक्रम ने एक ओर जहां संभावित संवाद की उम्मीद जगाई है, वहीं दूसरी ओर क्षेत्र में तनाव और बढ़ने की आशंका भी बनी हुई है।

ईरान में जहाज पर फंसा भारतीय युवक

केरल के हरिपाड के रहने वाले जेरिन जॉर्ज के माता-पिता ने गुरुवार को अपने बेटे की सुरक्षित घर वापसी के लिए अधिकारियों से गुहार लगाई है। जॉर्ज पश्चिम एशिया में युद्ध शुरू होने के बाद से एक ईरानी जहाज पर फंसे हुए हैं। परिजनों के अनुसार, जेरिन जॉर्ज करीब आठ महीने पहले काम के सिलसिले में घर से निकले थे और 3 मार्च तक लौटने की उम्मीद थी।

प्रतिबंधों के बावजूद खाड़ी में दाखिल हुआ दूसरा सुपरटैंक

समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, अमेरिका द्वारा प्रतिबंधित एक और सुपरटैंकर होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते खाड़ी में प्रवेश कर गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, आरएचएन नाम का यह वेरी लार्ज कैरियर बुधवार को खाड़ी में दाखिल हुआ। समुद्री डेटा फर्म रस्श्वत और चश्चद्यद्वह के आंकड़ों के अनुसार, यह टैंकर फिलहाल खाली है और इसकी क्षमता लगभग 20 लाख बैरल तेल ढोने की है।

कुरनूल में लॉरी और बोलेरो की टक्कर में 8 तीर्थयात्रियों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले से एक हृदयविदारक घटना सामने आई है। मंत्रालयम मंडल के चिलकलाडोना के पास एक बोलेरो गाड़ी और लॉरी के बीच हुई भीषण टक्कर में कम से कम 8 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई। इस दर्दनाक हादसे में 10 से 12 अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिनका अस्पताल में इलाज जारी है।

पुलिस से मिली प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, सभी मृतक और घायल कर्नाटक के चिक्कमगलुरु क्षेत्र के रहने वाले थे। ये सभी श्रद्धालु मंत्रालयम मंदिर में दर्शन करने के बाद वापस लौट रहे थे, तभी चिलकलाडोना के पास उनकी बोलेरो गाड़ी विपरीत दिशा से आ रही एक लॉरी से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बोलेरो के परखच्चे उड़ गए। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और मलबे में फंसे लोगों को बाहर निकाला। घायलों को तुरंत एमिगनूर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि दुर्घटना तेज रफ्तार की वजह से हुई या ड्राइवर की लापरवाही से। परिवहन मंत्री मंडीपल्ली रामप्रसाद रेड्डी ने इस घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने दुर्घटना में जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**